आधुनिक भारत का इतिहास

विषय सूची

1. गवर्नर जनरल _____ 2-9

2. 1857 की क्रान्ति _____ 10-13

3. सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन _____ 14-21

4. राष्ट्रीय आन्दोलन _____ 22-50

   राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम चरण _____ 25-26

   राष्ट्रीय आन्दोलन का द्वितीय चरण _____ 27-32

   राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण _____ 33-50

5. भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन _____ 51-55

6. भारत में साम्यवादी आन्दोलन _____ 56-59

1 गवर्नर जनरल

लॉर्ड कॉर्नवालिस (1785–93)

भू राजस्व सुधारः

- 1790 में 10 वर्षीय ठेका प्रणाली शुरू की गई। इसमें पुराने जमींदारों को ठेके दिये गये। 1793 में इसे स्थायी कर दिया गया इसलिए इस व्यवस्था को स्थायी बन्दोबस्त कहा जाता है। इसका प्रारूप (Draft) जॉन शोर ने तैयार किया था इसलिए इसे जॉन शोर व्यवस्था भी कहा जाता है।
- राजस्व का 10/11 हिस्सा कम्पनी को तथा 1/11 हिस्सा जमींदारों को दिया जाता था।
- यह व्यवस्था ब्रिटिश भारत के 19% क्षेत्रों पर लागू होती थी–

क्षेत्रः सम्पूर्ण बंगाल, उत्तरी बंगाल, बनारस

- स्थायी बन्दोबस्त के कम्पनी को लाभ

कम्पनी को लाभः

1. कम्पनी के समय एवं धन दोनों की बचत हुई।
2. कम्पनी के कार्यकुशलता में वृद्धि हुई। क्योंकि राजस्व विभाग के कर्मचारियों को अब अन्य विभागों में लगाया जा सकता था।
3. कम्पनी की आय निश्चित हो गई तथा अब उसके अनुसार कम्पनी भविष्य की योजनाऐं बना सकती थी।
4. जमींदारों के रूप में अंग्रेजों को एक स्वामीक्त वर्ग मिल गया था।
5. स्थाई बन्दोबस्त से कम्पनी को तात्कालिक लाभ हुआ तथा दीर्घकालिक रूप में हानि हुई। क्योंकि कम्पनी राजस्व नहीं बढ़ा सकती थी। इसलिए बाद में दक्षिण भारत में रैय्यतबाड़ी तथा उत्तर भारत में महालवाड़ी व्यवस्था को लागू किया।

स्थायी बन्दोबस्त से हानिः

a. जमीदार को भूमि का मालिक माना गया इससे किसान मजदूर की भूमिका में आ गया।
b. प्रारम्भ में कम्पनी द्वारा भू–राजस्व अधिक निश्चित किया गया। इससे किसानों का शोषण बढ़ा।
c. जमींदारों द्वारा समय–समय पर भू–राजस्व बढ़ा दिया जाता था इससे किसानों की हालत दयनीय हो गई।
d. जमींदारों ने कृषि में कोई नये सुधार नहीं किये इससे किसानों का शोषण बढ़ा।
e. अनुपस्थित जमींदारों की एक श्रृंखला बन गई थी। जो किसानों का अधिक शोषण करते थे।
f. कम्पनी के स्वामिभक्त जमींदार वर्ग ने राष्ट्रवादी भावनाओं को दबाने का कार्य किया।
g. प्रारम्भ में कई जमींदारों को भी हानि हुई। जमींदारों पर Sun set (सूर्यास्त का नियम) लागू होता था तथा यदि कोई जमींदार समय पर भू–राजस्व जमा नहीं करवाता तो उसकी जमींदारी जब्त कर ली जाती थी।

1793 में कॉर्नवालिस ने कॉनवालिस कोड/संहिता तैयार करवाया

कॉनवालिस कोड की विशेषताऐं

(I) इसमें शक्तियों का पृथक्करण किया गया।
(II) कानून के समक्ष सभी को समान माना गया।
(III) हत्या के तरीके के बजाय हत्या के उद्देश्य पर बल दिया जाने लगा।
(IV) रक्त मूल्य की परम्परा समाप्त कर दी गई।
(V) अंग–भंग के स्थान पर कठोर कारावास की सजा दी गई।
(VI) गवाह की धार्मिक योग्यता को समाप्त किया गया।
(VII) वकालत का पेशा प्रारम्भ किया गया।

कॉनवालिस कोड का महत्वः

(1) हमारी आधुनिक न्यायिक व्यवस्था प्रारम्भ हुई।

(2) यह कोड पश्चिमी मान्यताओं पर आधारित था।

(3) कानून की सर्वोच्चता (सभी के लिए समानता) लागू की गई।

(4) निष्पक्षता का सिद्धान्त लागू होता था।

कॉनवालिस कोड की कमियाँ

(1) न्याय धीमा तथा महँगा हो गया था।

(2) धनवान लोग धन देकर न्याय खरीद लिया करते थे।

(3) अंग्रेज न्यायाधीश भारतीय परिस्थितियों से परिचित नहीं थे।

(4) कानून अत्यधिक जटील थे तथा भारतीय उनको समझ नहीं पाये। इसलिए लोग जातीय पंचायतों का सहरा लेने लगे।

(5) कॉर्नवालिस ने भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा भारतीय पुलिस सेवा की शुरूआत की थी।

लॉर्ड वेलेजली (1798–1805)

– भारत में सहायक सन्धि प्रणाली को बड़े तौर पर लागू किया।

सहायक सन्धिः

– जिस रियासत के साथ सहायक सन्धि की जाती थी उसकी रक्षा का भार अंग्रेज अपने पास ले लेते थे। इसके बदले में बड़ी रियासत अंग्रेजों को भूमि तथा छोटी रियासते नकदी देती थी।
उस रियासत को अपने विदेशी मामले अंग्रेजों को देने पड़ते थे।
रियासत में कम्पनी का प्रतिनिधि रहता था, जिसे रेजीडेन्ट कहा जाता था।

सहायक सन्धि के कारणः

(1) अंग्रेजों को नेपोलियन का डर लग रहा था।

(2) भारत में मराठों को छोड़कर कोई राजनैतिक शक्ति नहीं बची थी जो अंग्रेजों से संघर्ष कर सके। लेकिन कम्पनी को भारतीय रियासतों के संगठन बनाने का डर था।

(3) कम्पनी अपने सैनिक आधार को बढ़ाना चाहती थी।

(4) कम्पनी भारत में एक राजनैतिक शक्ति थी लेकिन अब वह स्थायित्व प्राप्त करना चाहती थी।

सहायक सन्धि करने वाली रियासतें

(1) हैदराबाद (1799)

(2) मैसूर

(3) तंजोर (1800)

(4) अवध (1801)

(5) पेशवा (1802) (बसीन की सन्धि)

सहायक सन्धि से कम्पनी को लाभः

(1) कम्पनी को अपना साम्राज्य बढ़ाने में मदद मिली। क्योंकि रियासतों द्वारा उन्हें सम्प्रभु क्षेत्र दिया जाता था।

(2) भारतीय खर्चे पर अंग्रेज एक बड़ी सेना तैयार करने में सफल रहे।

(3) सामरिक महत्व के सभी स्थानों पर कम्पनी का कब्जा हो गया।

(4) कम्पनी को भारतीय रियासतों के संगठन बनाने का डर समाप्त हो गया। क्योंकि रियासतों ने अपने विदेशी मामले को कम्पनी दे दिये।

(5) कम्पनी को नेपोलियन का भय समाप्त हो गया। क्योंकि कम्पनी को पूछे बिना किसी विदेशी को सेवा में नहीं रखा जा सकता था।

(6) कम्पनी सभी भारतीय रियासतों के आपसी विवादों की मध्यस्थ बन गई थी।

(7) रेजीडेण्ट ने रियासतों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया।

(8) युद्ध क्षेत्रों को कम्पनी के क्षेत्रों (कलकत्ता, बंगाल, मद्रास आदि) से दूर कर दिया गया

भारतीय रियासतों को सन्धि से हानिः

(1) भारतीय राजाओं ने अपनी स्वतंत्रता को बेचकर सुरक्षा खरीद ली थी।

(2) कम्पनी द्वारा अनेक अयोग्य राजाओं को संरक्षण दिया गया इससे जनता का शोषण हुआ।

(3) राजाओं की विलासितापूर्ण जीवनशैली में वृद्धि हुई।

(4) रियासत में सत्ता के 2 केन्द्र बन गये थे। राजा तथा रेजीडेन्ट तथा अब रेजीडेन्ट आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करता था।

(5) कई भारतीय राजा आर्थिक दिवालिये हो गये थे क्योंकि कम्पनी को दिया जाने वाला धन बहुत अधिक होता था तथा तब राजाओं ने भू–राजस्व बढ़ाने की कोशिश की तो किसानों ने विद्रोह कर दिया।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–23)

प्रथम आंग्ल–नेपाल युद्धः (1814–16)

– सुगोली की सन्धि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

सन्धि की शर्तेः

(1) शिमला, नैनिताल, रानीखेत, कुमाऊँ आदि पर अंग्रेज ने अधिकार कर लिया।

(2) नेपाल का सिक्किम से अधिकार समाप्त कर दिया गया काठमाँडू में अंग्रेजी सेना तैनात कर दी गई।

इस समय दक्षिण भारत में रैय्यतवाड़ी तथा उत्तर भारत में महालवाड़ी नामक भू–राजस्व व्यवस्था शुरू की गई।

रैय्यतवाड़ी व्यवस्थाः

– रैय्यत = किसान

– 1792 में **"कैप्टन रीड"** ने **बारामहल** से इस व्यवस्था की शुरूआत की थी।

– कालान्तर में मद्रास में मुनरो तथा बॉम्बे में एलफिन्सटन ने इस बड़े तौर पर लागू किया।

इसमें किसानों को भूमि का मालिक माना गया।

– यह व्यवस्था भारत के 51% क्षेत्र पर लागू होती थी।

रैय्यतवाड़ी व्यवस्था को लागू करने के कारणः

(1) दक्षिण भारत में जमींदार वर्ग का अभाव था।

(2) कम्पनी ने माना कि किसानों को भूमि का मालिक बनाने से वे भूमि खेती) में सुधार करेंगे।

(3) किसानों को भूमि का मालिक बनाने से वे अंग्रेजों के समर्थक हो जायेंगे तथा अंग्रेजों को अपने प्रशासनिक सुधार लागू करने में आसानी होगी।

(4) स्थाई बन्दोबस्त में कई कमियाँ थी।

जैसेः

– स्थाई बन्दोबस्त में कम्पनी भू–राजस्व बढ़ा नहीं सकती थी।

– जमींदारों ने भूमि सुधारने के प्रयास नहीं किये थे।

– अनुपस्थित मध्यस्थों की श्रृंखला बन गई थी।

रैय्यतवाड़ी व्यवस्था के लाभः

(1) प्रारम्भ में किसानों ने बंजर भूमि को सुधारने के प्रयास किये थे।

(2) अंग्रेजों को अपने प्रशासनिक सुधारों को लागू करने में आसानी रही।

(3) भारत में भूमि वितरण का आदर्श स्थापित किया गया।

रैय्यतवाड़ी व्यवस्था की हानिः

(1) भू–राजस्व अधिक था, कम्पनी समय–समय पर भू–राजस्व बढ़ा दिया करती थी इसलिए किसानों का शोषण हुआ।

(2) अंग्रेज नकदी में भू–राजस्व लेते थे इसलिए किसान साहूकारों के कर्जजाल में फँस गये थे।

(3) राजस्व वसूली के लिए कम्पनी को अधिक कर्मचारियों की आवश्यकता थी। अतः इस विभाग में दूसरे विभागों से कर्मचारी लगाये गये इसलिए प्रशासनिक कार्य (दूसरे विभाग के) कमी आई।

(4) कम्पनी के प्रशासनिक अधिकारी जमींदारों के रू‍प में आ गये थे।

(5) प्राचीन भारतीय भूमि व्यवस्था टूट गई तथा भूमि व किसान दोनों चलायमान (Transperable) हो गये।

(6) भू–राजस्व वसूली में कठोरता बरती जाती थी। तथा भू–राजस्व जमा न कराने पर किसानों को भूमि से बेदखल कर दिया जाता था।

(7) कम्पनी ने कृषि में कोई नई तकनीक लाने का प्रयास नहीं किया।

(8) कम्पनी दक्षिण भारत की परिस्थितियों से परिचित नहीं थी इसलिए अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग भू–राजस्व कर दिया था।

महालवाड़ी व्यवस्था

(महाल–गाँव या गाँव का समूह)

– यह व्यवस्था 1822 में हॉल्ट मैकेन्जी द्वारा शुरू की गई। कालान्तर में मार्टिन बर्ड ने इसे बड़े तौर पर लागू किया था।

– मार्टिन बर्ट को उत्तर भारत में भूमि सुधारों का जनक कहा जाता है।

– उत्तर–पश्चिम प्रान्त में इसे जैम्स थॉमसन ने लागू किया था।

– यह ब्रिटिश भारत के 30% क्षेत्र पर लागू होती थी।

– यह पंजाब, संयुक्त प्रान्त तथा उत्तर–पश्चिम प्रान्त में लागू की गई थी।

– इस व्यवस्था में पूरे गाँव का भू–राजस्व एक साथ निश्चित कर दिया जाता था।

– यहाँ पर ग्राम सभा को भूमि का मालिक बनाया गया।

– प्रारम्भ में भू–राजस्व 80% रखा गया लेकिन बाद में विलियम बैंटिक ने इसे घटाकर 66% कर दिया था। डलहौजी ने **सहारनपुर नियम** के अनुसार इसे 50% कर दिया था।

महालवाड़ी व्यवस्था की कमियाँ

(1) भू–राजस्व अधिक था इसलिए किसानों का शोषण होता था।

(2) भूमि पर ग्राम सभा का अधिकार था परन्तु बड़े किसान जमींदारों की भूमिका में आ गये थे। तथा उन्होंने छोटे किसानों की भूमि हड़प ली।

(3) कई किसान भू–राजस्व देने से मना कर देते थे उसका प्रभाव अन्य किसानों पर पड़ता इससे गाँव की सामाजिक व्यवस्था में बिखराव हुआ तथा सामाजिक व्यवस्था टूटी।

भारत के गवर्नर जनरल

– **1833 के चार्टर एक्ट** द्वारा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया।

– **'विलियम बैंटिक'** भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।

विलियम बैन्टिक (1828–35)

– भारत में बंगाल के गवर्नर जनरल के रूप में आया था लेकिन 1833 के चार्टर एक्ट के द्वारा उसे भारत का गवर्नर जनरल बना दिया।

– 1829 में **धारा 17** के तहत **सती प्रथा** पर रोक लगा दी यह रोक राजाराममोहनराय के प्रयासों से लगी थी।

– **राधाकान्त देव** ने इस प्रतिबन्ध का विरोध किया था। इसके संगठन का नाम **धर्म सभा** था।

– विलियम बैन्टिक ने **ठग प्रथा** का उन्मूलन किया था **"कर्नल स्लीमैन"** के नेतृत्व में इसका उन्मूलन किया था।

– इन्होंने अफीम के व्यापार का नियम किया था। केवल बॉम्बे बन्दरगाह से अफीम का व्यापार किया जा सकता था।

– कॉर्नवालिस द्वारा स्थापित भ्रमणशील अदालतों को बन्द कर दिया था।

– न्यायालय में स्थानीय भाषाओं (फारसी के स्थान पर) का प्रयोग भी किया जा सकता है।

– 1835 में कलकत्ता में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की।

आंग्ल–प्राच्य विवाद

– 1813 के चार्टर एक्ट के द्वारा भारत में शिक्षा के विकास के लिए 1 लाख रु. दिये गये। लेकिन इनके उपयोग को लेकर विवाद हो गया।

– लोकशिक्षा समिति के 5 सदस्य अंग्रेजी के समर्थक थे तथा शेष 5 सदस्य संस्कृत व फारसी के समर्थक थे।

– बैंटिक ने मैकाले को लोकशिक्षा समिति का अध्यक्ष बनाया।

– 2 Feb.1835 को मैकाले स्मरण पत्र जारी किया गया मैकाले ने अपना प्रसिद्ध **विप्रवेशन/निस्पंदन सिद्धान्त** दिया।

– इसके तहत भारतीय उच्च वर्ग को अंग्रेजी माध्यम में पाश्चात्य शिक्षा दी जायेगी। उच्च वर्ग से यह शिक्षा टपक–टपक कर/छन–छन कर जनसाधारण तक पहुँच जायेगी। 7 मार्च 1835 को इस सिद्धान्त को सरकार ने स्वीकार कर लिया।

– कालान्तर में गर्वनर जनरल हॉर्ड ऑकलैण्ड द्वारा इसे लागू किया गया

समिति के अंग्रेजी समर्थक	**प्राच्य समर्थन**
बैंटिक	जेम्स प्रिंसेप
मैकाले	थॉमस प्रिंसेप
मुनरो	विल्सन
एलफिन्सटन	ट्रेवेलियन
राजा राम मोहनराय	

अंग्रेजी शिक्षा लागू होने के कारण:

(1) कम्पनी को सस्ते कर्मचारी चाहिये थे।

(2) कम्पनी अपने प्रशासनिक सुधारों को आसानी से लागू करना चाहती थी।

(3) शिक्षा के माध्यम से भारतीयों की मानसिकता बदली जाये ताकि वे अंग्रेजी राज के समर्थक बन जाये।

(4) अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीय अंग्रेजी संस्कृति के समर्थक बन जायेंगे जिससे अंग्रेजों का व्यापार–वाणिज्य बढ़ेगा।

(5) अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार ?

– 1835 में अंग्रेजी को भारत की प्रशासनिक भाषा बना दिया गया।

– बैंटिक प्रेस पर प्रतिबन्ध के खिलाफ था।

– बैंटिक ने **1831 में मैसूर, 1834 में कुर्ग तथा कछार** को अंग्रेजी रियासत में मिला लिया गया था।

– मैकाले **विधि सदस्य** के रूप में भारत आया था। (1833 के चार्टर एक्ट के अनुसार) भारत में "कानूनों का संहिताकरण" करता है।

लॉड डलहौजी (1848–56)

– डलहौजी आधुनिक भारत के मानचित्र का निर्माता था।

– डलहौजी ने भारतीय रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया था।

युद्ध द्वारा किये गये विलयः

(1) पंजाब (1849)

(2) सिक्किम (1850)

(3) लॉअर वर्मा व पीगू (1852)

शान्तिपूर्ण तरीके से किये गये विलयः

गोद निषेध नीति/व्यपगत/हड़प नीति डलहौजी ने भारतीय रियासतों को 3 भागों में बाँटा।

(1) वे रियासतों जो अंग्रेजों के आने के समय स्वतंत्र थी तथा बाद में अंग्रेजों से सन्धियाँ कर लेती हैं।

(2) वे रियासते जो पहले मुगलों एवं मराठों के अधीन थी तथा अभी वे अंग्रेजों के अधीन है।

(3) अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई रियासते।

पहली रियासतों को गोद लेने का अधिकार है, दूसरी व तीसरी रियासतों को गोद लेने से पहले पूछना पड़ेगा।

दूसरी रियासतों को वैसे यथासंभव अनुमति दे दी जायेगी लेकिन तीसरी रियासतों का विलय कर लिया जायेगा।

1848 – सतारा

1849 – जैतपुर/संभलपुर

1850 – बघाट

1852 – उदेपुर (M.P.)

1853 – झाँसी

1854 – नागपुर

1855 – करौली

वुड डिस्पैच 1854

ये सुधार चार्ल्स वुड के नेतृत्व में किये थे इसलिए इन्हें **वुड डिस्पैच** कहा जाता है।

चार्ल्स वुड बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल का अध्यक्ष था।

वुड डिस्पैच के मुख्य प्रावधान

(1) अंग्रेजी शिक्षा नीति का उद्देश्य पाश्चात्य ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना है।

(2) प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जाये तथा माध्यमिक शिक्षा (5–10) अंग्रेजी तथा स्थानीय दोनों भाषा में दी जाये। तथा उच्च शिक्षा केवल अंग्रेजी में होनी चाहिए।

(3) जिला स्तर पर **अंग्लोवर्नेकुलर** (दोना भाषा में) स्कूल खोले जाये।

(4) पाँचों प्रान्तों में शिक्षा विभाग की स्थापना की जाये। तथा इनमें कमीश्नर नियुक्त किया जाये जो गवर्नर जनरल को रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

(5) कलकत्ता, बॉम्बे व मद्रास में यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) खोले जाये।

(6) अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये।

(7) महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। वुड डिस्पैच को शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।

वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878)

देशी/स्थानीय भाषा के समाचार पत्र सरकार के खिलाफ लिखने पर जब्त कर लिये जायेंगे।

इसे गैगिंग एक्ट (मुँह बन्द रखना) (Gagging Act) भी कहा जाता है।

समाचार पत्र सम्पादक

सोमप्रकाश ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

ढाका प्रकाश (बड़ी कार्यवाही सोमप्रकाश पर ही हुई थी)

भारत मिहिर

सहचर

– अमृत बाजार पत्रिका–मोतीलाल घोष का समाचार पत्र था इस कानून से बचने के लिए बांग्ला से अंग्रेजी में भाषा बदल ली थी।

लॉर्ड रिपन (1880–84)

1881 में प्रथम कारखाना अधिनियम

– कम से कम 100 मजदूरों वाले कारखानों पर लागू होता था।

– 7 वर्ष तक के बच्चे कारखानों में काम नहीं कर सकते।

– 7 से 12 वर्ष तक के बच्चे केवल 9 घण्टे काम करेंगे।

– 1882 में भारत में स्थानीय स्वशासन की शुरूआत की गई।

(नगरपालिका, नगरबोर्ड आदि बनाये गये)

हन्टर आयोग 1882

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में सुधार किये जायेंगे।

सिफारिशें: (हन्टर आयोग)

(1) प्राथमिक शिक्षा सरकार द्वारा दी जानी चाहिए। इसका उत्तरदायित्व स्थानीय स्वशासन को दिया जाये।

(2) शिक्षा के लिए उपकर (Cess) लगाया जा सकता है।

(3) माध्यमिक शिक्षा 2 प्रकार की होनी चाहिए।

(i) व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)

(ii) साहित्यिक शिक्षा (literatue) (कॉलेज में प्रवेश हेतु)

(4) प्रेजीडेन्सी नगरों के अतिरिक्त भी महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये।

(5) उच्च शिक्षा का निजीकरण करना चाहिए। तथा इसके लिए अनुदान (Grant) दिये जाना चाहिए।

इल्बर्ट बिल विवाद: (1883)

– कोई भी भारतीय न्यायाधीश फौजदारी मामले में अंग्रेज मुजरिम को नहीं सुन सकता था। इस भेदभाव को दूर करने के लिए इल्बर्ट बिल लाया गया जिसका अंग्रेजों ने विरोध किया था।

– इस विरोध को दूसरा श्वेत विद्रोह कहा जाता है। बाद में ऐसे मामले में Jury (Berch) का प्रावधान किया गया जिसमें 12 जज होते थे तथा इसमें आधे से अधिक अंग्रेज होते थे।

– इसमें P.C. इल्बर्ट विधि सदस्य (Legal Member) था।

प्रथम श्वेत विद्रोहः

क्लाइव के समय बंगाल में दोहरे भत्ते बन्द के कारण हुआ था।

– मिस्त्र में भारतीय सेना भेजने के सवाल पर रिपन ने इस्तीफा दे दिया था।

– फ्लोरेंस नाइटिगेल ने रिपन को भारतीयों का उद्धारक कहा था।

(नर्सिंग डे इन्हीं को याद में मनाया जाता है)

इसे A Lady with a Lamp भी कहा जाता है।

1891–दूसरा कारखाना अधिनियम

– 50 से अधिक मजदूरों वाले कारखानों पर लागू होता था।

– 9 वर्ष तक के बच्चे कारखाने में काम नहीं कर सकते।

– 9 वर्ष से 19 वर्ष तक के बच्चे 7 घण्टे तक काम करेंगे।

– महिलायें 11 घण्टे से अधिक कार्य नहीं करेंगी।

(सुबह 5 से शाम 8 बजे के बीच)

विश्वविद्यालय आयोग–टॉमस रेले

– विश्वविद्यालय शिक्षा पर चर्चा के लिए **शिमला सम्मेलन** बुलाया गया।

– 1902 में थॉमस रेले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग बनाया गया।

इस आयोग में 2 भारतीय सदस्य थे।

– गुरुदास बनर्जी

– सैय्यद हुसैन बिलग्रामी

इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया।

– विश्वविद्यालय अधिनियम (1904):

(1) विश्वविद्यालय द्वारा भी शिक्षा प्रदान की जाये।

(2) विश्वविद्यालयों में प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय स्थापित किये जाये।

(3) सभी विश्वविद्यालयों की सीनेट में सरकारी सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई।

(4) विश्वविद्यालयों का क्षेत्राधिकार गवर्नर जनरल तय करेगा।

(5) निजी कॉलेजों के विश्वविद्यालय से मान्यता लेने की शर्तों को कठोर कर दिया गया।

– कर्जन कॉलेज के छात्रों में बढ़ रही राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलना चाहता था इसलिए उसने विश्वविद्यालय पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया था।

2 1857 की क्रान्ति

1857 की क्रान्ति के कारण:

(1) राजनैतिक कारण:

- वेलेजली की सहायक सन्धि द्वारा भारतीय रियासतों को आश्रित बनाने की परम्परा शुरू की गई जिसका चरम विकास डलहौजी की हड़प नीति में था।
- व्यपगत (हड़पना) का सिद्धान्त वास्तव में नैतिकता का व्यपगत था क्योंकि अंग्रेजों द्वारा किसी भी रियासत को किसी भी समय समाप्त किया जा सकता था। इससे भारतीय शासक भयभीत थे यही कारण है कि उन्होंने क्रान्ति का नेतृत्व किया।
- अनुपस्थित प्रभुसत्ता ने भारतीयों के आक्रोश को और बढ़ा दिया था।
- मुगल बादशाह की उपाधि छीनने का प्रयास किया गया। उससे मुस्लिम समाज में असंतोष था।

(2) प्रशासनिक कारण:

- सामन्त तथा अभिजात वर्ग के विशेषाधिकार समाप्त कर दिये गये थे।
- 1856 में अवध में एकमुश्त बन्दोबस्त लागू किया गया तथा जमींदारों की जमीने छीन ली गई। इसलिए सामन्तों एवं जमींदारों ने क्रान्ति में सक्रिय भाग लिया था।

(3) आर्थिक कारण:

- नई भू–राजस्व नीतियों व भू–राजस्व अधिक होने से किसानों का शोषण हुआ तथा नगदी भू राजस्व के कारण साहूकारों के चंगुल में फँस गये।
- कृषि का वाणिज्यीकरण किया गया जिससे खाद्यान्न की कमी हो गई तथा लगातार अकाल से किसानों की स्थिति दयनीय हो गई थी।
- कम्पनी द्वारा कच्चे माल पर अधिकार कर लिया गया इससे भारतीय हस्त शिल्प कुटीर उद्योग बर्बाद हो गये। सूती वस्त्र की मातृभूमि भारत को विदेशी कपड़ों से भर दिया। कम्पनी द्वारा व्यापारिक नीतियाँ अंग्रेजों के अपने पक्ष में बनाई जाती थी इससे भारतीय व्यापार वाणिज्य समाप्त हो गया।

  यही कारण है कि किसान, मजदूर व व्यापारी सभी ने क्रान्ति में भाग लिया था।

(4) समाजिक–धार्मिक कारण

- अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के साथ नस्लीय भेदभाव किया जाता था। भारतीयों को प्रशासन में ऊँचे पद नहीं दिये जा सकते थे। अंग्रेजों द्वारा सामाजिक रीति–रिवाजों में हस्तक्षेप किया गया। ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दु व इस्लाम धर्म का मजाक उड़ाया जाता था।
- 1850 के धार्मिक अयोग्यता अधिनियम के अनुसार धर्म परिवर्तन के बाद पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा।

(5) सैनिक कारण

- भारतीय सैनिकों को अंग्रेजों के समान वेतन व सुविधाऐं प्रदान नहीं की जाती थी।
- 1854 के डाकघर अधिनियम से सैनिकों की निःशुल्क डाक सेवा बन्द कर दी गई।
- 1856 के सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम के अनुसार सैनिकों की किसी भी स्थान पर नियुक्ति की जा सकती थी जबकि भारतीय समुद्री यात्रा को धर्म भ्रष्ट मानते थे।

(6) तात्कालिक कारण

- ब्राउनबैस बन्दूकों के स्थान पर नई एनफील्ड राइफलों का प्रयोग हुआ जिनमें चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग किया जाता था।

घटनाक्रमः

- बैरकपुर में **34वीं इनफेन्ट्री** के सैनिक **मंगल पाण्डे** ने 29 मार्च को चर्बी वाले करतूतों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- 8 अप्रैल को उसे फांसी दे दी गई।
- 24 अप्रैल को मेरठ छावनी के 90 सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- 10 मई को मेरठ छावनी में क्रान्ति की शुरूआत होती है।
- 20 Native infantary (NI) तथा 3 Light cavelary (LC) ने विद्रोह किया था।
- विद्रोही सैनिक दिल्ली चले गये तथा 11 मई को बहादुर शाह जफर को अपना नेता बनाया।
- 25 अगस्त को बहादुरशाह के नाम से (सभी को क्रान्ति के प्रेरित करने के लिए) **आजमगढ़ घोषणा** की गई।

केन्द्र	**नेतृत्वकारी**	**अंग्रेज अधिकारी**
(1) दिल्ली	1. बहादुर शाह जफर	1. निकलसन
	2. बख्त खान	2. हड़सन
		निकलसन लड़ता हुआ मारा गया तथा बहादुर शाह को हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार किया गया।
(2) लखनऊ	1. बेगम हजरत महल और (महक परी)	कैम्पवेल
	2. बिरजिस कादिर	

– अवध में क्रान्ति ने जनविद्रोह का रूप धारण कर लिया था।

बंगाल आर्मी में सर्वाधिक सैनिक अवध के होते थे इसलिए **अवध को 'बंगाल आर्मी की नर्सरी'** कहा जाता था।

– हेनरी लॉरेन्स लखनऊ में लड़ता हुआ मारा गया।

– बेगम हजरत महल नेपाल चली गई।

(3) कानपुर — नाना साहब उपनाम (धुन्धुंपंत) — कैम्पबेल

तात्या टोपे (रामचन्द्र पाण्डुरंग)

– नाना साहब नेपाल चले गये।

(4) झाँसी — 1. लक्ष्मीबाई — ह्यूरोज

2. तात्या टोपे

– रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था। सिन्धिया ने अंग्रेजों का साथ दिया था तथा रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर में लड़ते हुये मारी गई।

– ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई के बारे में कहा कि– **''भारतीय क्रान्तिकारियों में एक मात्र मर्द है''**

– तात्या टोपे को मानसिक ने नरवर के जंगलों में गिरफ्तार करवा दिया तथा शिवपुरी में उसे फांसी दे दी गई।

– कैनिंन ने कहा था–

''सिंधिया अगर क्रान्ति में शामिल हो जाता तो हमें भारत से जाना पड़ता।''

(5) जगदशीपुर (बिहार) — 1. कुँवर सिंह — विलियम टेलर

(6) फैजाबाद — मौलवी अहमद उल्ला शाह (डंका शाह) — रेनर्ड

– 22 NI. इन्हे इन्हें अपना नेता बनाया।

– चिनहाट की लड़ाई में हेनरी लॉरेन्स को हराया था।

– अंग्रेजों ने इन पर 50 हजार रु. का इनाम घोषित किया था।

(7) बरेली 1. खान बहादुर खान विन्सेट आयर
2.बख्त खान (यहाँ से दिल्ली गया था।)
(8) इलाहाबाद लियाकत अली नील
(9) फतेहाबाद अजीमुल्ला
(10) बड़ौत शाहूमल
(11) छोटा नागपुर गोनू (कोल जनजाति के साथ विद्रोह किया था)

क्रांति के योजनाकार

1. अजीमुल्ला,
2. रंगोजी बापू

– क्रान्ति का दिन 31 मई तय किया गया था लेकिन मेरठ में क्रान्ति 10 मई को शुरू हो गई थी।
– क्रान्ति के प्रतीक : 1. कमल का फूल, 2. रोटी

क्रान्ति के परिणाम/महत्वः

- ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया गया तथा ब्रिटिश क्राउन ने शासन अपने हाथों में ले लिया था।
  Court of Directors (COD) तथा Board of control (BOC) समाप्त कर दिये थे तथा भारत सचिव की नियुक्ति की गई।
  जिसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों की भारत परिषद् होती थी। उसका कार्यालय इण्डिया हाउस कहलाता था जिसके सभी खर्चे भारत से भेजे जाते थे।
- गवर्नर जनरल (G.G.) का नाम बदलकर वायसराय कर दिया गया।
  हालांकि शासन में परिवर्तन किया गया परन्तु उसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया।
  साम्राज्यवादी नीतियों से भारतीयों का शोषण अनवरत जारी रहा।
  ये सभी परिवर्तन 1858 के भारत परिषद् अधिनियम के अनुसार किये गये।
- क्रान्ति का कारण डलहौजी की हड़प नीति को माना गया इसलिए क्रान्ति के बाद प्रादेशिक सीमा विस्तार की नीति त्याग दी गई। हालाँकि रियासतों का विलय नहीं किया जाता था लेकिन उन पर अंग्रेजी सम्प्रभुता बनी हुई थी।
- क्रान्ति की शुरूआत सैनिकों ने की थी इसलिए क्रान्ति के बाद सेना में विभाजन एवं प्रतितोलन का सिद्धान्त अपनाया गया इसके तहत बंगाल प्रेजीडेन्सी में अंग्रेज व भारतीय सैनिकों का अनुपात 1 : 2 तथा मद्रास व बॉम्बे प्रजीडेन्सी में यह अनुपात 1 : 3 रखा गया।
  सामरिक महत्व वाले स्थानों पर अंग्रेजों की नियुक्तियाँ की जाती थी।
- 1857 की क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने अपना सम्पूर्ण ध्यान व्यापार–वाणिज्य पर लगाया तथा साम्राज्यवादी आर्थिक नीतियों के कारण भारतीयों का शोषण और बढ़ा।
- क्रान्ति के बाद अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति नस्लीय–भेदभाव और बढ़ गया था तथा अंग्रेजी शासन को सही साबित करने के लिए श्वेत जाति का भार (White men burdon theory given by Rudyard kiping) नामक सिद्धान्त दिया।
- 1858 के महारानी विक्टोरिया घोषणा पत्र के अनुसार सभी भारतीय महारानी की संतान है तथा उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायेगा। प्रशासनिक पद योग्यता के अनुसार दिये जायेंगे उसके लिए 1861 में सिविल सेवा अधिनियम पारित किया गया तथा ICS (Inian Civil service) के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाने लगा लेकिन इस परीक्षा के सभी नियम अंग्रेजों के पक्ष में थे।
- क्रान्ति का कारण शासक व शासितों के बीच दूरी को माना गया इसलिए क्रान्ति के बाद भारतीयों को शासन में प्रतिनिधित्व दिया गया लेकिन यह नाममात्र का था तथा केवल कुलीन भारतीयों को शामिल किया जाता था।
- भारतीयों ने हिंसा के माध्यम से क्रान्ति की थी लेकिन अब असफल रहे तो हमने यह तरीका त्याग दिया तथा हमारा आगे का राष्ट्रीय आन्दोलन अहिंसात्मक रहा।

- क्रान्ति का नेतृत्व राजा–महाराजा तथा सामन्तों ने किया था लेकिन जब क्रान्त असफल हो गई तो हमारा नेतृत्व मध्यम वर्ग के हाथों में आ गया जो अंग्रेजी शिक्षा पढ़कर तैयार हुआ था।
- क्रान्ति के दौरान हमने बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में पुरातन व्यवस्था को स्थापित करने की कोशिश की लेकिन असफल होने पर क्रान्ति के बाद हमारे लक्ष्य स्वराज, पूर्ण स्वराज, तथा लोकतंत्र बन गये थे।
- क्रान्ति ने आगमी राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेरणा स्त्रोत का कार्य किया था। मजूमदार महोदय कहते है।
  ''जिंदा हाथी लाख का, मरा हाथी सवा लाख का।''

क्रान्ति का स्वरूप या प्रकृति

1857 की क्रान्ति के स्वरूप को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है।

- **लोरेंस व सिले** के अनुसार सैनिकों के **सेवा सम्बन्धी शर्ते** व **चर्बी वाले कारतूसों** के खिलाफ विद्रोह किया था अतः यह एक सैनिक विद्रोह था लेकिन यह मत सही नहीं है क्योंकि क्रान्ति में **गैर सैनिक तत्व** सम्मिलित हुए थे क्रान्ति के बाद साधारण जनता को फांसी दी गई थी तथा अधिकांश भारतीय सैनिक **अंग्रेजों की तरफ से लड़ रहे थे।**
  उसे सैनिक विद्रोह बताना अंग्रेजों की एक चाल थी क्योंकि यदि इसे वे सैनिक विद्रोह के अलावा बताते तो उनके तथाकथित अच्छे शासन पर प्रश्नचिन्ह लग जाता।
- **T.R. होम्स** के अनुसार इसे **सभ्यता व बर्बरता के बीच** संघर्ष कहा है लेकिन यह मत भी गलत है क्योंकि क्रान्ति के दौरान जितनी बर्बरता भारतीयों ने दिखाई थी **उससे कहीं अधिक बर्बरता अंग्रेजों द्वारा** की गई थी।
- **L.E.R रीज** ने इसे धर्मान्धों तथा ईसाइयों के बीच संघर्ष तथा आउट्रम व टेलर ने हिन्दु–मुस्लिम षड़यंत्र बताया है लेकिन यह उनकी **संकीर्ण मानसिकता का परिचायक** है।
- **ब्रिटिश प्रधानमंत्री बेंजामिन डिजरैली** ने इसे राष्ट्रीय विद्रोह स्वीकार किया था तथा उन्होंने कहा था–
  ''साम्राज्य का उत्थान व पतन चर्बी वाले कारतूसों से नहीं होता।''
- **रमेश चन्द्र मजूमदार** ने इसे–ना पहला, ना राष्ट्रीय, ना स्वतंत्रता संग्राम कहा है उनके अनुसार भारत में पहले भी कई सैनिक व गैर सैनिक विद्रोह हो चुके थे इसमें शामिल लोग भी अपनी अलग–अलग स्वार्थों के लिए लड़ रहे थे तथा उस समय तक भारत में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास नहीं हुआ था तथा पंजाब, सिक्किम व मद्रास विद्रोह से अलग रहे थे।
- **सुरेन्द्र नाथ सेन** मजूमदार महोदय के तर्कों का जवाब देते हुए कहते है कि विश्व की किसी भी क्रान्ति में वहाँ का पूरा देश शामिल नहीं होता है बल्कि देश व समाज का बड़ा तबका क्रान्ति करता है। चूँकि 1857 की क्रान्ति में भी ऐसा हुआ था इसलिए इसे सफल विद्रोह माना जाना चाहिए। हालाँकि उस समय तक भारत में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास नहीं हुआ था लेकिन फिर भी सभी क्रान्तिकारियों का **एक साथ दिल्ली पहुँचना, बहादुर शाह जफर को अपना नेता मानना** उसके नाम से विभिन्न घोषणा करना, साधारण जनता का क्रान्ति में शामिल हो जाना आदि से पता चलता है कि उस समय भारतीयों का एकमात्र लक्ष्य अंग्रेजों को बाहर निकालना था।
  सेन महोदय ने ठीक ही कहा है कि यह सैनिक विद्रोह से कुछ अधिक तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से थोड़ा कम था।
- निश्चित रूप से यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था। (वीर सावरकर) जिसने अंग्रेजों को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर कर दिया तथा हमारे आगामी राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेरणा स्त्रोत का कार्य किया।

निष्कर्ष मे हम कह सकते हैं कि यह सैनिक विद्रोह से प्रारम्भ हुआ था लेकिन बाद में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में बदल गया था।

3 सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन

राजाराम मोहनराय

उपाधियाँ

– आधुनिक भारत का पिता

– भारतीय पुर्नजागरण का जनक

– अतीत व भविष्य के बीच सेतु

इनके द्वारा स्थापित संगठन

– आत्मीय सभा 1815

– हिन्दु कॉलेज 1817

– वेदांत कॉलेज 1825

– ब्रिटिश यूनिटेरियन एसोसिएशन

– ब्रह्म समाज 1828

इनकी पुस्तकें:

1. तुहफुतुल–मुहावुद्दीन or एकेश्वरवादियों के उपहार or Girft to monotheist
2. हिन्दु उत्तराधिकार के नियम
3. Precepts of Jesus

समाचार पत्र:

1. मिरातुल अखबार
2. संवाद कौमुदी
3. ब्रह्मेनिकल मैगजीन

विचारधारा:

1. सती प्रथा, बाल विवाह, बहु–विवाह, कन्या वध आदि का विरोध किया।
2. मूर्ति पूजा, कर्म–काण्ड, अवतारवाद, बहुदेववाद का विरोध किया।
3. विधवा पुर्नविवाह, महिला शिक्षा, अंग्रेजी शिक्षा, एकेश्वरवाद का समर्थन किया।
4. स्थायी बन्दोबस्त का समर्थन किया था।
5. पूँजीवाद का समर्थन किया।
6. लोकतंत्र का समर्थन किया।
7. उच्चपदों पर भारतीयों के नियुक्ति की माँग की।
8. उपनिषदों का समर्थन करते थे।

– 1833 में ब्रिस्टल में राजा राम मोहन राय की मृत्यु हो गई थी।

– सेरामपुर के ईसाई मिशनरियों से एकेश्वरवाद को लेकर वाद–विवाद हुआ था।

अन्य सहयोगी:

द्वारिका नाथ टैगोर

ताराचन्द्र चक्रवती

– 1843 में **देवेन्द्र नाथ टैगोर** ने ब्रह्म समाज को संभाला। (जिन्होंने 1839 में तत्वबोधिनी सभा की स्थापना की थी।)

पत्रिका–तत्वबोधिन, (**संम्पादक** –अक्षय कुमार दत्त)

– देवेन्द्र नाथ टैगोर ने केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया।

– 1865 में केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज से निकाल दिया गया। तथा इन्होंने बाद में **भारतीय ब्रह्मसमाज** की स्थापना की।

– अतः बाद में देवेन्द्र नाथ टैगोर का ब्रह्म समाज **आदि ब्रह्मसमाज** कहलाया।

– 1872 में केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से Native Mariage Act पारित हुआ तथा विवाह की न्यूनतम आयु 14 व 18 वर्ष तय की गई।

– केशवचन्द्र सेन ने अपनी नाबालिग पुत्री की शादी कूच बिहार के राजा के साथ कर दी थी इसलिए उनके समर्थकों ने अलग होकर 1878 में साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की।

साधारण ब्रह्म समाजः

समर्थकः आनन्द मोहन बोस

सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

द्वारिका नाथ गांगुली

केशवचन्द्र सेन के समाचार पत्र : Indian Mirror

केशवचन्द्र सेन के संगठन

1. मैत्री सेन (संगत सभा)
2. टेबरनिकल ऑफ न्यू डिस्पेंसन
3. इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन

वेद समाज

इसे 'दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज' कहा जाता है। इसकी स्थापना केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से हुई।

संस्थापकः धरलु नायडू, विश्वनाथ मुदालियर

प्रार्थना समाज (1867)

महाराष्ट्र में केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से स्थापना हुई।

संस्थापकः

1. जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे
2. आत्माराम पाण्डुरंग
3. R.G. भण्डारकर
4. चन्द्रावरकर

महादेव गोविन्द रानाडेः गोखले के राजनीतिक गुरु थे।

– इन्हें 'महाराष्ट्र का सुकरात' कहा जाता है।

– **संगठनः**

1. विधवा विवाह संघ (1867)
2. पूना सार्वजनिक सभा (1871)
3. दक्कन एजुकेशनल सोसायटी (1884) (फर्ग्यूसन कॉलेज पूणे)
4. नेशनल सोशल कॉन्फ्रेस (1887)

दक्कन एजुकेशनल सोसायटी बाद में फर्ग्यूसन कॉलेज कहलाई।

तिलक, गोखले, आगरकर तीनों इस कॉलेज से जुड़े थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

– 1824 में मौरवी (गुजरात) गाँव में जन्म हुआ था।

– वास्तविक नाम : मूलशंकर

– उनके गुरु पूर्णानन्द ने इसे दयानन्द सरस्वती नाम दिया।

– गुरु विरजानन्द जी (अन्य नामः वृद्धानन्द/बुढ़ढन बाबा) ने इन्हें वेदों की शिक्षा दी थी।

– दयानन्द सरस्वती का नारा–'वेदों की ओर लोटो'

केवल ऋग्वेद को प्रामाणिक ग्रन्थ (Arithentic) मानते थे।

– 1875 में बॉम्बे में आर्य समाज की स्थापना की।

– 1877 में लाहौर तथा 1878 में दिल्ली में स्थापना की।

– पुस्तकः 1. सत्यार्थ प्रकाश, 2. अद्वैत मत का खण्डन।

– पहली बार स्वदेशी, स्वराज, स्वभाषा की माँग उठाई थी।

– जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था की आलोचना की।

– छुआछूत का विरोध किया।

– सती प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, कन्या वध आदि का विरोध किया।

– विधवा पुर्नविवाह का समर्थन किया।

– यज्ञों का समर्थन किया।

– 1883 में जोधपुर में नन्ही जान नामक महिला ने जहा दे दिया अजमेर में इनकी मृत्यु हो गई।

– इनकी मृत्यु के बाद आर्यसमाज 2 भागों में विभाजित हो गया।

	वैदिक समर्थक	अंग्रेजी तथा वैदिक समर्थक
•	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	लाला लाजपतराय
•	लेखराम	लाला हंसराज
•	मुंशीराम	
•	इन्होंने गुरुकुल कांगडी (हरिद्वार) की स्थापना की।	इन्होंने D.A.V. स्कूल/कॉलेज की स्थापना की।

– आर्य समाज ने **शुद्धि आन्दोलन** चलाया था जिसमें ईसाई तथा मुस्लिम या धर्म परिवर्तन कर चुके, हिन्दुओं को पुनः हिन्दु बनाया जाता था।

– वेलेन्टाइन शिरोल ने अपनी पुस्तक Indian unrest में आर्य समाज को भारतीय अशान्ति का जनक बताया।

वेलेन्टाइन शिरोल ने बाल गंगाधर तिलक को भी भारतीय अशान्ति का जनक बताया।

स्वामी विवेकानन्द

– **वास्तविक नाम :** नरेन्द्र नाथ दत्त
– खेतड़ी महाराजा अजीतसिंह ने विवेकानन्द नाम दिया था।
– **इनके गुरु :** रामकृष्ण परमहंस
– 1893 में शिकागों के विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया था।
– 1896 में न्यूयार्क में 'वेदान्त समाज' की स्थापना की।
– 1897 में वैलूर (कलकता) में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

समाचार पत्रः

1. प्रबुद्ध भारत (अंग्रेजी) 2. उद्‌बोधन (बांग्ला)

– मुख्य शिष्याः मार्गेट एलिजाबेथ (सिस्टर निवेदिता)
– सुभाष चन्द्र बोस ने इन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कहा था।

एनी बिसेन्ट

थियोसोफीकल सोसायटी (1875)
संस्थापक – मैडम बलावत्सकी, कर्नल अल्कॉट (न्यूयॉर्क में)।
1882 में अड्यार (मद्रास) को मुख्यालय बनाया।
हिन्दु, बौद्ध व पारसी धर्म/संस्कृति में विश्वास रखते थे।
– एनी बिसेन्ट 1893 में थियोसोफीकल सोसायटी के सदस्य के रूप में भारत आयी थी।
– 1907 में थियोसोफीकल सोसायटी की अध्यक्ष बनी थी।
– 1898 में बनारस में हिन्दु कॉलेज की स्थापना की।
यह कॉलेज 1916 में मदनमोहन मालवीय के प्रयासों से बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय (BHU) बन गया।
– एनी बिसेन्ट ने एक भारतीय जना कृष्ण मूर्ति को गोद लिया था तथा भगवान कृष्ण का अवतार घोषित कर दिया था।
– **समाचार पत्रः** 1. कॉमन वील, 2. न्यू इंडिया

हेनरी विवियन डेरोजियो

– कलकत्ता के हिन्दु कॉलेज में प्रोफेसर था।
– स्वतन्त्र चिन्तन तथा तर्कशक्ति को बढ़ावा दिया था।
– इन्होंने राजा राम मोहन राय की परम्परा को आगे बढ़ाया था।
– इन्होंने 'यंग बंगाल आन्दोलन' चलाया था।
– 1831 में 22 वर्ष की आयु में हैजे से मृत्यु हो गई।
– सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने इनके अनुयायी को सभ्यता के अग्रदूत तथा हमारी जाति का पिता कहा है।

संगठनः

1. सोसायटी फोर एक्वीजिशन ऑफ जनरल नॉलेज
2. एकेडेमिक एसोसिएशन
3. डिबेटिंग क्लब
4. एंग्लो इण्डियन हिन्दू एसोसिएशन
5. बंग हित सभा

समाचार पत्रः

1. ईस्ट इण्डिया, 2. इण्डिया गजट, 3. कलकत्ता साहित्य गजट

ज्योतिबा फूले

– संगठन : सत्य शोधक समाज
– समाचार पत्रः गुलामगिरी
– अपनी पत्नी सावित्री बाई फूले के साथ मिलकर दलित बच्चों के लिए स्कूल खोले थे।

गोपाल हरि देशमुख

– संगठनः परमहंस मंडल
– समाचार पत्र : लोकहितवादी
– इस पत्रिका के कारण इन्हें लोकहितवादी कहा जाता था।

अलीगढ़ आन्दोलन

– यह आन्दोलन सर सैय्यद अहमद खाँ ने चलाया था। इन्होंने मुसलमानों में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास किया इसलिए अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया व अंग्रेजी सरकार के साथ सहयोग किया।
– इन्होंने कुरान की वैज्ञानिक व्याख्या की।
– पीर–मुरीदी प्रथा का विरोध किया।
– बाइबिल पर टीका लिखी।

संगठनः

1863 – मुहम्मडन लिटरेरी एसोसिएशन
1864 – साइंटिफिक सोसाइटी
1875 – एंग्लो–ओरियन्टल मोहम्मडन कॉलेज
यही 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना।
1888 में देशभक्त एसोसिएशन नामक पार्टी बनाई।
– बनारस के राजा शिवप्रसाद के साथ मिलकर बनाई थी।
यह कांग्रेस की विरोधी संस्था थी।

समाचार पत्रः

1. तहजीब उल अखलाक
2. राजभक्त मुसलमान

– प्रारमभ में हिन्दु

मुस्लिम एकता के समर्थक थे तथा हिन्दु व मुसलमान को एक सुन्दर दुल्हन की 2 आँखे बताते थे। लेकिन बाद में कहा कि हिन्दु व मुसलमान 2 अलग–अलग 2 देश हैं

– थियोडोर बैंक, मॉरीसन, आर्चबोल्ड

इन्होंने अलीगढ़ आन्दोलन को अंग्रेजों के पक्ष में झुकाया था।

Note: W.W. हंटर की पुस्तक–इण्यिन मुसलमान

देवबंद आन्दोलन

– 1867 में U.P. (देवबन्द) से शुरू
– 1857 की क्रान्ति में शामिल लोगों ने यह आन्दोलन शुरू किया।
– इन्होंने आधुनिकीकरण का विरोध किया।
– संस्थापकः (1) रशीद अहमद गंगोही, (2) मुहम्मद कासिम ननोत्वी

– उद्देश्यः

(1) इस्लाम के मूलस्वरूप को स्थापित करना।
(2) अच्छे धार्मिक शिक्षक तैयार करना।
– यह आन्दोलन अलीगढ़ आन्दोलन का विरोध करता था।
– यह आन्दोलन कांग्रेस का समर्थन करता है।
– महमूद उल हसन ने देवबन्द आन्दोलन को राजनीतिक संस्था बनाया।

– शिबली नुमानी :

पहले अलीगढ़ आन्दोलन से जुड़े लेकिन बाद में देवबन्द आन्दोलन से जुड़े गये थे।

वहाबी आन्दोलन

– ईरान में अब्दुल वहाब द्वारा शुरू किया गया था।
– भारत में **सैय्यद अहमद बरेलवी** ने लोकप्रिय किया था।
– उद्देश्यः दारुल हर्ब को दारूल इस्लाम में बदलना।
– प्रारम्भ में पंजाब में सिखों के खिलाफ था।
– पंजाब के विलय के बाद अंग्रेजों के खिलाफ हो गया था।
– यह हिंसक एवं साम्प्रदायिक आन्दोलन था।
– कालान्तर में पूर्वी भारत इसका मुख्य केन्द्र हो गया।

यहाँ के मुख्य नेताः

(1) हाजी करामात अली
(2) शरीयत–उल्ला खाँ

अहमदिया आन्दोलन

– 1889 में कादिया (पंजाब) से गुलाम अहमद शुरू किया।
– स्वयं को पैगम्बर तथा भगवान श्री कृष्ण का अवतार घोषित किया।
– पुसतकः बहरीन–ए–अहमदिया

रहनुमा–ए–माज्दा–ए–सभा (पारसी)

संस्थापक

(1) फरदोन जी नौरोजी
(2) दादा भाई नौरोजी
(3) बहराम जी मालाबारी
(4) S.S बंगाली

समाचार पत्रिकाः राफ्त गोफ्तार

– इन्होंने महिला सशक्तिकरण का प्रयास किया। + शारदा सदन

महिला सुधार

विधवा पुनर्विवाह

– 1850 में विष्णु शास्त्री पंडित ने विधवा–विवाह समाज की स्थापना की।
– 1852 में करसोन दास मलजी ने सत्य प्रकाश (गुजराती) नामक पत्रिका निकाली जो विधवा–विवाह का समर्थन करती थी।
– 1878 में वीर शैलिगम ने राजा मुन्द्री सोशल रिफॉर्म नामक संगठन की स्थापना की जो विधवा–विवाह को बढ़ावा देती थी।
– 1899 में D.K. कर्वे ने विधवा आश्रम की स्थापना की।

बालिका शिक्षा

– 1819 में ईसाई मिशनरियों ने तरुण स्त्री सभा की स्थापना की।
– 1849 में J.E.D. बेटन ने कलकत्ता में पहला बालिका विद्यालय की स्थापना की थी।
– ईश्वर चन्द्र विद्यासागर 35 से अधिक बालिका विद्यालयों से जुड़े हुये थे।
– D.K. कर्वे ने 1906 में बॉम्बे में महिला कॉलेज की स्थापना की थी।
– केशवचन्द्र सेन, फातिका शेख, रुकैया (Book : Dreams of Sultana) सखावत हुसैन ने भी बालिका शिक्षा के प्रयास किये थे।

बाल विवाह

– 1929 में बाल विवाह रोकने के लिए **हरविलास शारदा** के प्रयासों से शारदा अधिनियम बना। जिसमें विवाह की न्यूनतम आयु 14 वे 18 वर्ष तय की गई।

सम्मति आयु अधिनियम

– 1860 में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से सम्मति आयु अधिनियम पारित हुआ। जिसमें न्यूनतम आयु 10 वर्ष तय की गई।
– 1891 में **बहराम जी मालाबारी** के प्रयासों से सम्मति आयु अधिनियम पारित हुआ तथा न्यूनतम आयु 12 वर्ष तय की गई।

धर्म सुधार आन्दोलन के कारणः

(1) **अंग्रेजों से सम्पर्क**

भारतीय जब अंग्रेजों के सम्पर्क में आये तो उनके आडम्बर रहित धर्म, समानता आधारित समाज तथा प्रगतिशील सोच से प्रभावित हुये तथा भारतीय समाज को भी वैसा बनाने के लिए सोचने लगे।

(2) **अंग्रेजी शिक्षाः**

अंग्रेजी शिक्षा के कारण यूरोप के आविष्कार, खोज व क्रान्तियों का पता चला जिससे भारतीय समाज में आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ।

अंग्रेजी अनुवाद के कारण हम प्राचीन भारतीय पुस्तके पढ़ने में सक्षम हुये इससे भारतीय समाज में चेतना का संचार हुआ।

(3) **ईसाई मिशनरीः**

1813 के चार्टर एक्ट में ईसाई मिशनरीयों को भारत में धर्म प्रचार की छूट दी गई।

इनके द्वारा हिन्दु व इस्लाम धर्म की मजाक उड़ाई जाती थी जिससे हमें हमारी कुरूतियों का पता चला तथा उन्हें दूर करने में लग गये।

(4) **अंग्रेजी कानूनः**

अंग्रेजों ने दास प्रथा, सती प्रथा खत्म करने के कानून बनाये विधवा पुर्नविवाह अधिनियम पारित किया इससे हमारे समाज सुधारकों को बल प्राप्त हुआ तथा आन्दोलन में गति आई।

(5) **यातायात व संचार के साधनः**

यातायात व संचार के साधनों से सामाजिक गतिशीलता बढ़ गई थी जिससे सामाजिक भेदभाव कम हुआ तथा समाज की संकीर्णता दूर हुई।

(6) **समाचार पत्र एवं पुस्तकें**

राजाराम मोहन राय व ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे समान सुधारकों ने अनेक पुस्तक लिखी। इनके समाचार पत्रों द्वारा सामाजिक कुरूतियों पर प्रहार किया जाता था जिससे समाज में बदलाव आना शुरू हुआ।

(7) **स्वप्रेरणाः**

राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द जैसे समाज सुधारक स्वः प्रेरणा में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में लग गये। उन्होंने समाज में जन जागरण का कार्य किया।

(8) **इतिहास का पुर्नलेखन**

अंग्रेजों ने इतिहास का पुर्नलेखन किया तथा इसमें प्राचीनकाल को स्वर्णकाल बताया गया। इससे भारतीयों ने अपना समाज भी वैसा ही बनाने के लिए सोचने लगे।

धर्म सुधार आन्दोलन की प्रकृतिः

(1) **आधुनिकतावादी**

इस आन्दोलन का स्वरूप आधुनिकतावादी था तथा यह पश्चिम की विचारधारा से प्रेरित था उसमें तार्किकता पर अधिक बल दिया जाता था। सामाजिक रीतिरिवाजों की तार्किक व्याख्या की जाती थी।

सभी समस्याओं का हल मानव को केन्द्र में रखकर किया जाता था। अतः इसमें मानववाद पर अधिक बल दिया जाता था।

जैसेः ब्रह्म समाज, अलीगढ़ आन्दोलन, यंग बंग आन्दोलन

(2) **पुनर्रुत्थानवादीः**

कुछ समाज सुधारकों का मानना था कि जो आधुनिक मूल्य है वे पहले से हमारी संस्कृति में मौजूद हैं तथा इसके लिए पश्चिम की तरफ देखने की आवश्यकता नहीं है। अतः उन्होंने पाश्चात्यकरण का विरोध किया व प्राचीन भारतीय मूल्यों को स्थापित करने की कोशिश की।

जैसेः आर्यसमाज, देवबन्द आन्दोलन

(3) **रूढिवादी**

कुछ समाज सुधारक रूढ़िवादी मानते थे तथा सामाजिक कुरूतियों को सांस्कृतिक मूल्य बताकर उन्हें बचाने का प्रयास करते थे इन्होंने भी पाश्चात्यकरण का विरोध किया था। जैसे–धर्म सभा, वहाबी आन्दोलन।

(4) धर्म सुधार आन्दोलन के दौरान अनेक संगठनों की स्थापना की गई इस प्रकार यह आन्दोलन संगठनात्मक था।

(5) वहाबी आन्दोलन के अतिरिक्त धर्म सुधार आन्दोलन अहिंसात्मक प्रकृति का था।

(6) इस आन्दोलन की प्रकृति मध्यमवर्गीय थी।

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रभावः

सकारात्मकः

(1) हमारा धर्म आडम्बरों से मुक्त हुआ तथा सामाजिक कुरूतियाँ दूर हुई।

(2) महिलाओं से सम्बन्धित सामाजिक कुरूतियाँ दूर हुई जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।

(3) सामाजिक भेदभाव कम होने से सामाजिक एकता बढ़ी जिससे राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिली।

(4) समाज–सुधारकों द्वारा अनेक स्कूल व कॉलेज की स्थापना की गई। इससे शिक्षा का प्रसार हुआ तथा आधुनिकता आई।

(5) समाज–सुधारकों ने अनेक पुस्तके लिखी व समाचार पत्र निकाले जिससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बल मिला।

(6) इस आन्दोलन में प्राचीन भारतीय इतिहास का गुणगान किया गया। जिससे भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा जो राष्ट्रीय आन्दोलन में काम आया।

(7) इस आन्दोलन में हमने अन्याय व अत्याचार के खिलाफ संघर्ष किया कालान्तर में यही प्रवृत्ति अंग्रेजों के खिलाफ जारी रही।

नकारात्मकः

(1) थियोसोफीकल सोसायटी व अहमदिया आन्दोलन के अतिरिक्त सभी सुधारकों ने अपने–अपने धर्म की बात की तथा अपने धर्म को महान बताकर उसका गौरवगान किया इससे दूसरे धर्म की अप्रत्यक्ष आलोचना हुई।

(2) आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन व वहाबी आन्दोलन के दारूल इस्लाम के नारे से **साम्प्रदायिकता को बढ़ावा** मिला।

(3) कुछ समाज सुधारक यथास्थितिवादी थे तथा उन्होंने सामाजिक कुरूतियों को सांस्कृतिक मूल्य बताकर उनका संरक्षण किया जिससे आन्दोलन पश्चगामी हो गया।

धर्म सुधार आन्दोलन की सीमाएँः

(1) भारतीय समाज यथास्थितिवादी था तथा परिवर्तनों को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता था।

(2) भारतीय समाज में **शिक्षा का अभाव** था तथा आधुनिक मूल्यों से परिचित नहीं थे।

(3) समाज सुधार आन्दोलन को अंग्रेजी सरकार द्वारा कोई सहयोग नहीं मिला।

(4) भारत एक बड़ा देश है तथा विभिन्न भाषा के लोग यहाँ रहते है अतः यातायात व संचार के साधनों में कमी व भाषा की दिक्कतों के कारण आन्दोलन अधिक सफल नहीं हो पाया।

Springboard ACADEMY

4 राष्ट्रीय आन्दोलन

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

- 28 दिसम्बर, 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।
- इसी दिन से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरूआत मानी जाती है।
- कांग्रेस की स्थापना से पहले भी कई राजनैतिक संगठन बन चुके थे, जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

पूना सार्वजनिक सभा [1872 ईस्वी] - महादेव गाविन्द रानाडे

लंदन में

ईस्ट इंडिया एसोसियसन [1866 ईस्वी]

संस्थापक – दादा भाई नौरोजी

बॉम्बे में

(i) बॉम्बे एसोसियसन 1868 ईस्वी

(ii) बॉम्बे प्रेजीडेन्सी एसोसियसन

(iii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885 ईस्वी)

बंगाल में

(i) बंगाल जमींदार सभा, 1838 ईस्वी

(ii) बंगाल ब्रिटिश एसोसियसन, 1843 ईस्वी

(iii) ब्रिटिश इंडिया एसोसियसन, 1851 ईस्वी

(iv) इंडिया लीग, 1875 ईस्वी

(v) इंडियन एसोसियसन, 1876 ईस्वी

(vi) नेशनल कांग्रेस, 1883 ईस्वी

मद्रास में

(i) मद्रास नेटिव एसोसियसन, 1852 ईस्वी

(ii) मद्रास महाजन सभा, 1884 ईस्वी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- 1884 ईस्वी में '**थियोसोफिकल सोसायटी**' का अड्यार (मद्रास) में सम्मेलन हुआ।
- A.O. Hume ने इस सम्मेलन में भारतीयों को ''अखिल भारतीय संगठन'' बनाने का सुझाव दिया।
- इस संगठन का नाम 'इंडियन नेशनल यूनियन' रखा गया। इसका पहला सम्मेलन **पूना** में होना था लेकिन वहाँ पर **प्लेग** फैलने के कारण इसका पहला सम्मेलन बॉम्बे के **गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज** में हुआ।
- दादा भाई नौराजी ने सुझाव पर इसका नाम ''इंडियन नेशनल कांग्रेस'' रखा गया।

कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन

1885 ईस्वी

स्थान – बॉम्बे

अध्यक्ष – व्योमेश चन्द्र बनर्जी (पहले ईसाई अध्यक्ष)

- सम्मेलन में 72 लोगों ने भाग लिया।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने सम्मेलन में भाग नहीं लिया।
- इस सम्मेलन में 9 प्रस्ताव पारित किये गये।
- इनमें से एक भी प्रस्ताव किसानों व मजदूरों से सम्बन्धित नहीं था।

1905 ईस्वी

स्थान – बनारस

अध्यक्ष – गोपाल कृष्ण गोखले

इस अधिवेशन में कांग्रेस ने 'स्वदेशी आन्दोलन' को समर्थन दिया था।

1906 ईस्वी

स्थान – कलकत्ता

अध्यक्ष – दादा भाई नौरोजी

- गरम दल **बाल गंगाधर तिलक** को अध्यक्ष बनाना चाहता था।
- इस सम्मेलन में कांग्रेस ने पहली बार 'स्वराज' की माँग की थी।
- कांग्रेस ने 4 प्रस्ताव पारित किये थे–
  (i) स्वराज
  (ii) राष्ट्रीय शिक्षा
  (iii) स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग
  (iv) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

1907 ईस्वी

स्थान – सूरत

अध्यक्ष – रास बिहारी बोस

- यह अधिवेशन पहले नागपुर में प्रस्तावित था। लेकिन तिलक का नागपुर में प्रभाव अधिक होने के कारण नरम दल वालों ने इसे सूरत स्थानान्तरित कर दिया था।
- गरम दल लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाना चाहता था।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस दो भागों में बँट गयी–
  (i) गरम दल – उग्रवादी
  (ii) नरम दल – उदारवादी

1916 ईस्वी

स्थान – लखनऊ

अध्यक्ष – अम्बिका चरण मसूमदार

- गरम दल व नरम दल में समझौता हो गया था।
- यह समझौता तिलक व एनी बिसेन्ट के प्रयासों में हुआ।
- कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच भी समझौता हो गया, जिसे लखनऊ समझौता, कहा जाता है। यह समझौता तिलक व मुहम्मद अली जिन्ना के प्रयासों से हुआ।

Note : मदन मोहन मालवीय ने इस समझौते का विरोध किया।

1924 ईस्वी

स्थान – बेलगाँव (कर्नाटक)

अध्यक्ष – महात्मा गाँधी

- गाँधीजी ने केवल एक बार कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।
- इसमें हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया था।

1931 ईस्वी

स्थान – कराची

अध्यक्ष – वल्लभ भाई पटेल

- कांग्रेस ने ''गाँधी–इरविन समझौता'' (दिल्ली समझौता – 5 मार्च, 1931) को स्वीकार कर लिया।
- कांग्रेस ने आर्थिक व राजनैतिक घोषणा पत्र जारी किया–
  - **(i) राजनैतिक पत्र**
    कांग्रेस ने भारतीयों के लिए 'मौलिक–अधिकारों' की माँग की।
  - **(ii) आर्थिक पत्र**
    कांग्रेस ने 'ट्रेड यूनियन' के लिए स्वायत्तता की माँग की।
    समाजवादी अर्थव्यवस्था की माँग की।
- इस अधिवेशन ने समय 'नौजवान भारत सभा' के सदस्यों ने गाँधीजी का विरोध किया था। यह संगठन भगतसिंह द्वारा स्थापित किया गया था तथा ये लोग भगतसिंह की फाँसी के कारण गाँधीजी से नाराज थे।
- इस अधिवेशन के दौरान गाँधीजी ने कहा था– ''गाँधी मर सकता है पर गाँधीवाद नहीं।''

1938 ईस्वी

स्थान – हरिपुरा

अध्यक्ष – सुभाष चन्द्र बोस

- रियासतों में चल रहे प्रजामण्डल आन्दोलनों को कांग्रेस ने समथ्रन दिया।
- योजना समिति का गठन किया। इसके अध्यक्ष 'जवाहर लान नेहरू' थे।

1939 ईस्वी

स्थान – त्रिपुरी

अध्यक्ष – सुभाष चन्द्र बोस

- सुभाष चन्द्र बोस ने अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सीतारमैंम्या को हराया था, जिनको गाँधीजी का समर्थन प्राप्त था।
- कार्यकारिणी में सदस्यों को लेकर कांग्रेस तथा सुभाष चन्द्र बोस के बीच मतभेद थे, अतः सुभाष चन्द्र बोस ने इस्तीफा दे दिया तथा राजेन्द्र प्रसाद को नया अध्यक्ष बना दिया गया।

भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

1. अंग्रेज सरकार

ब्रिटिश नीतियों का प्रभाव
↓
सकारात्मक | नकारात्मक

	सकारात्मक	नकारात्मक
(i)	राजनैतिक एकता	साम्राज्यवादी नीति
(ii)	प्रशासनिक एकरूपता	नस्सीय भेदभाव
(iii)	प्रशासन की निर्व्यक्तिकता	ईसाई मिशनरियों का धर्म प्रचार
(iv)	शिक्षा का विकास ⇒ पाश्चात्य आधुनिक मूल्यों का आगमन।	आर्थिक शोषण – धन का निगर्मन
(v)	यातायात व संचार के साधन, जैसे– रेल, डाक, तार	लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियाँ • वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, • शस्त्र अधिनियम, • ICS में आयु घटना
(vi)	समाचार–पत्र, पुस्तकों की भूमिका	इल्वर्ट बिल विवाद

2. 1857 ईस्वी की क्रांति
3. विभिन्न जनजातिय व कृषक विद्रोह
4. कांग्रेस की स्थापना
5. वैश्विक राष्ट्रवाद, 1870 ईस्वी में
   - जर्मनी
   - इटली

राष्ट्रीय आन्दोलन को 3 चरणों में बाँटा जा सकता है–

(1) नरमपंथी युग [1885 – 1905 ईस्वी]

(2) गरमपंथी युग [1905 – 1919 ईस्वी]

(3) गाँधी युग [1919 – 1947 ईस्वी]

Springboard ACADEMY

राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम चरण

[1885 – 1905 ईस्वी]

- इस चरण में नरमपंथियों का प्रभाव अधिक था।

  मुख्य नेता

  - व्योमेश चन्द्र बनर्जी
  - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
  - फिरोजशाह मेहता
  - दादा भाई नौरोजी
  - गोपाल कृष्ण गोखले

- **नरम पंथियों की विचारधारा**

  (i) अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास करते थे।

  (ii) अंग्रेजी शासन को भारत के लिए दैवीय वरदान थे, क्योंकि इनके अनुसार अंग्रेज भारत में आधुनिक शिक्षा और आधुनिक मूल्य लेकर आये हैं।

  (iii) अंग्रेजों के जाने से भारत में राजनीतिक अस्थिरता आ जायेगी।

  (iv) भारतीय जनता में राजनैतिक चेतना का विकास नहीं हुआ है, अतः उन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

  (v) भारतीयों का शैक्षिक विकास किया जाना चाहिए।

  (vi) सभी वर्ग, क्षेत्र व धर्म के पढ़े लिखे भारतीयों को आन्दोलन में शामिल किया जाना चाहिए।

  (vii) अधिवेशनों, प्रार्थना–पत्रों तथा ज्ञापनों के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को चलाया जाना चाहिए।

- **राष्ट्रीय आन्दोलन में नरम पंथियों का योगदान**

  Initiate organised leadership ⇒ Continuty – Consirteney.

  (i) राष्ट्रीय आन्दोलन प्रारम्भ किया, संगठित किया व नेतृत्व प्रदान किया।

  (ii) राष्ट्रीय आन्दोलन उसकी शैशवास्था में अंग्रेजों के दमन से बचाया।

  (iii) इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को धर्म–निरपेक्ष स्वरूप प्रदान किया।

  (iv) इन्होंने ''धन का निष्कासन'' (Drain of Wealth) सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया, इसलिए प्रथम चरण को 'आर्थिक राष्ट्रवाद' का दौर भी कहा जाता है।

- **इनके कारण कई सुधार करने पड़े थे, जैसे–**

  (i) 1886 ईस्वी – लोक सेवा आयोग

  (ii) 1892 ईस्वी – भारत परिषद अधिनियम

  (iii) 1896 ईस्वी – व्यय सुधार आयोग (वेलवी आयोग)

- **नरम पंथियों की कमियाँ**

  (i) अंग्रेजी शासन के वास्तविक स्वरूप को प्रकट नहीं कर पाये थे।

  (ii) भारतीय जनता का सामर्थ्य नहीं समझ पाये थे, अतः राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन नहीं बना पाये।

  (iii) नरमपंथी राष्ट्रीय आंदोलन में अंशकालिन योगदान देते थे।

  (iv) इनकी अधिकतर माँगें उच्च वर्ग से संबंधित थी, अतः यह जनता से नहीं जुड़ पाये थे।

  (v) इनकी अनुनय–विनय की नीति या राजनीतिक भिक्षावृति नीति से युवा वर्ग को निराश होती थी।

- **धन का निष्कासन (Drain of Wealth)**
  (i) शाब्दिक अर्थ – 'धन का एक पक्षीय प्रवाह।'
  (ii) यह सिद्धांत 'दादा भाई नौरोजी' ने दिया।
  (iii) 1867 ईस्वी में 'ईस्ट इंडिया एसोसियन' के अधिवेशन में दादा भाई द्वारा अपने लेख 'England's debt to India' में यह सिद्धांत प्रस्तुत किया था।
  (iv) कालान्तर में नौरोजी ने अपनी पुसतक "Poverty and unbritish Rule in India" में इस सिद्धांत की व्याख्या की।
  (v) 1896 ईस्वी के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने इस सिद्धांत को स्वीकार किया था।
  (vi) 1901 ईस्वी में G.K. गोखले ने ''इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' में इस सिद्धांत की सविस्तार व्याख्या की।
  (vii) आर.सी. दत्त ने अपनी पुस्तक "Economic History of India" में इस सिद्धांत की सविस्तार व्याख्या की थी।
  (viii) ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय धन ब्रिटेन को स्थानांतरित होता था, लेकिन इसके बदले भारत को कुछ भी प्राप्त नहीं होता था।
- **धन के निष्कासन के साधन/तरीके**
  (i) गृह व्यय
    - East India Company के कर्मचारियों के वेतन तथा पेंशन।
    - E.I.C. के शेयर धारकों का लाभांश।
    - COD/BOC के खर्चे।
    - कम्पनी के कर्जे का भुगतान।
    - भारत परिषद के खर्च।
    - सैनिक व गैर सेनिक खर्च।
    - ब्रिटेन से आने वाला सामान का खर्च।

  (ii) ब्रिटिश निवेशकों को दिया जाने वाला लाभ
  जैसे – रेल, बीमा, बैंक, चाय बागान, नील बागान।
  रेलवे में घाटे का भुगतान (गारंटी योजना)।
  (iii) अंग्रेज भारत में निजी व्यापार करते थे।
  (iv) भारतीय राजा–महाराजा (कुलीन वर्ग) अंग्रेजों को उपहार दिया करते थे।
- **धन के निष्कासन का प्रभाव**
  (i) भारत में पूँजी निर्माण नहीं हो सका, क्योंकि अतिरिक्त धन ब्रिटेन चला जाता था। अतः भारत में बचत नहीं हो पाती थी। परिणाम स्वरूप भारत में कृषि तथा उद्योगों का विकास नहीं हो पाया।
  (ii) कृषि तथा उद्योग की बर्बादी के कारण भारत में अकाल व बेरोजगारी की समस्याएँ उत्पन्न हो गयी।
  (iii) अतिरिक्त धन के कारण ब्रिटेन के लोगों का जीवन स्तर सुधरा।
  (iv) इसी भारतीय धन के फलस्वरूप इग्लैंड में 'औद्योगिक क्रांति' संभव हो सकी तथा भारतीय कुटीर उद्योगों का पतन हो गया।

''अंग्रेजी शासन स्पंज के समान है जो गंगा किनारे से सोखता है तथा थैम्स किनारे निचोकता है।''

जॉन सुलीवन का कथन

राष्ट्रीय आन्दोलन का द्वितीय चरण (गरम पंथी)

[1905 – 1919 ईस्वी]

इस चरण में गरम पंथियों का प्रभाव अधिक था।

मुख्य नेताः

(1) लाला लाजपतराय

(2) बालगंगाधर तिलक

(3) विपिन चन्द्र पाल

(4) अरविन्द घोष

गरम पंथियों के उदय के कारणः

(1) भारतीय नरम पंथियों से असंतुष्ट थे।

(2) भारतीय में अकाल व प्लेग की स्थिति थी तथा ब्रिटिश सरकार ध्यान नहीं दे रही थी।

(3) कर्जन की नीतियों के खिलाफ भारतीयों में गुस्सा था। (बंगा विभाजन, विश्वविद्यालय आयोग)

(4) इस समय पूरे विश्व में उग्र राष्ट्रवाद की लहर थी। तथा विश्व की कई घटनाओं ने भारतीयों को भी प्रभावित किया।

जैसेः 1895 में जापान की चीन पर जीत

1896 में इथोपिया की इटली पर जीत

1905 में जापान की रूस पर जीत

बोअर विद्रोह (डच किसान)

(5) धर्म सुधार आन्दोलन में प्राचीन भारत का गौरवगान किया गया इससे भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा।

गरमपंथियों की विचारधारा :

(1) ब्रिटिश शासन **साम्राज्यवादी तथा औपनिवेशिक** प्रकृति का है।

(2) भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना नहीं है लेकिन फिर भी उन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल करना चाहिए। क्योंकि उत्तरदायित्व देने से उत्तरदायित्व की क्षमताएँ विकसित होती हैं।

(3) राष्ट्रीय आन्दोलन में धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(4) स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।

(5) हड़ताल, जुलूस आदि का सहारा लेना चाहिए।

गरमपंथियों का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदानः

(1) अंग्रेजों के वास्तविक स्वरूप को उजागर किया था।

(2) राष्ट्रीय आन्दोलन को **जन आन्दोलन** बनाया।

(3) वस्तुओं के बहिष्कार से हमारे **स्वदेशी उद्योग–धन्धों** को फायदा हुआ।

(4) स्वदेशी शिक्षण–संस्थाओं की स्थापना की गई। उससे समाज में शिक्षा का प्रसार हुआ।

(5) इन्होंने व्यक्तिगत त्याग एवं बलिदान के उदाहरण पेश किये थे। जैसेः तिलक पहले राजनेता थे जो पहली बार जेल गये थे।

गरमपंथियों की कमियाँ

(1) इनकी अतिवादी रवैये के कारण कांग्रेस में विभाजन हो गया था। तथा ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को दबा कर दिया।

(2) इनके धार्मिक प्रतीकों के प्रयोग के कारण आन्दोलन के धर्म–निरपेक्ष स्वरूप को नुकसान पहुँचा।

(3) इन्होंने अंग्रेजों की आलोचना के बजाय नरम पंथियों की आलोचना में अधिक ध्यान दिया।

(4) गरम पंथी आपस में **संगठित नहीं** थे।

बंगाल विभाजन

- 19 जुलाई 1905 को कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की।
- 7 अगस्त को **स्वदेशी आन्दोलन** प्रारम्भ किया गया।

  आनन्द मोहन बोस ने कलकत्ता में एक बड़ी सभा को सम्बोधित किया।
- 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल विभाजन लागू कर दिया गया। बंगाल में उस दिन शोक दिवस मनाया गया।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर के कहने पर बंगाल में लोगों ने एक–दूसरे के राखी बाँधी।

  मुख्य गीत

  (1) वन्दे मातरम्

  (2) आमार सोनार बांग्ला
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने बंगाल विभाजन को (Bolt from Blue) आसमान से वज्रपात कहा था।
- कृष्ण कुमार मित्र के संजीवनी समाचार पत्र में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए कहा।
- अश्विनी कुमार दत्त (बारीसाल के अध्यापक) ने स्वदेशी बांधव समिति की स्थापना की तथा स्वदेशी नामक समाचार पत्र निकाला।
- अववीन्द्र नाथ टैगोर ने स्वदेशी चित्रकारी प्रारम्भ की तथा इण्डियन सोसायटी फॉर ऑरियन्टल आर्ट्स की स्थापना की।
- यह संस्था छात्रवृति देने का कार्य करती थी।
- नन्दलाल बोस को पहली बार छात्रवृति दी थी।
- पी.सी. राय ने बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल कम्पनी की स्थापना की।
- गुरुदास बनर्जी ने राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना की। अरविन्द घोष कलकत्ता के नेशनल कॉलेज के प्रिंसिपल थे।
- स्वदेशी आन्दोलन बंगाल के अलावा देश के अन्य भागों में हुआ।

  जैसेः

  (1) दिल्ली में – सैय्यद हैदर रजा

  (2) मद्रास में – चिदम्बरम पिल्लै

  (3) आन्ध्र प्रदेश – हरि सर्वोतम राव

  (4) पंजाब – लाला लाजपत राय

  (5) महाराष्ट्र – बाल गंगाधर तिलक
- स्वदेशी आन्दोलन को लेकर नरम दल व गरम दल में मतभेद हो गया।

  (1) नरम दलः

  स्वदेशी आन्दोलन को बंगाल तक सीमित रखना चाहता था। केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के पक्ष में थे।

  (2) गरम दल

  स्वदेशी आन्दोलन को पूरे देश में फैलाना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार के प्रत्येक पक्ष का बहिष्कार करना चाहते थे।
- 1907 में कांग्रेस में विभाजन हो गया तथा ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को कुचल दिया।

  तिलक पर राजद्रोह की धारा 124 (A) लगाकर 6 वर्ष की सजा सुनाई गई तथा बर्मा की मांडले जेल में भेज दिया गया।

स्वदेशी आन्दोलन का महत्व :

(1) भारत का पहला जन–आन्दोलन जिसमें सभी लोगों ने भाग लिया था।

(2) बंगाल विभाजन जैसे क्षेत्रीय मुद्दे से प्रारम्भ हुआ था लेकिन बाद में पूरे देश में फैल गया था।

(3) स्वदेशी अपनाने तथा विदेशी बहिष्कार से हमारे स्वदेशी उद्योग–धन्धों को फायदा हुआ।

(4) अनेक स्वदेशी शिक्षण संस्थाऐं स्थापित की गई। जिससे शिक्षा को बढ़ावा मिला।

(5) स्वदेशी अपनाने तथा विदेशी बहिष्कार जैसे उपकरण गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में काम आये।

(6) आन्दोलन के दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार को 1909 में सुधार करने पड़े।

मुस्लिम लीग

– एक मुस्लिम प्रतिनिधि मण्डल सर आगा खाँ के नेतृत्व में शिमला में गवर्नर जनरल (G.G.) मिन्टो– II (1 अक्टूबर 1906) को मिला।

इस प्रतिनिधि मण्डल का जनक अलीगढ़ कॉलेज का प्रिंसिपल आर्च बोल्ड था।

– 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना की।
  - **संस्थापक** : सलीम उल्ला खान
  - **प्रथम अध्यक्ष** : वकार उल मुल्क

– 1908 में सर आगा खाँ को स्थाई अध्यक्ष बनाया गया।

– 1908 के अमृतसर अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने पृथक निर्वाचन की माँग की।

1909 का भारत परिषद् अधिनियम (मार्ले–मिन्टो सुधार)

सुधार के कारण:

(1) 1892 के सुधारों को लम्बा समय बीत चुका था तथा कांग्रेस सुधारों की माँग कर रही थी।

(2) ब्रिटिश सरकार हिन्दु–मुस्लिम एकता को समाप्त करना चाहती थी।

(3) सुधारो के माध्यम से नरम पंथियों को संतुष्ट करना चाहते थे।

(4) ब्रिटिश सरकार क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रभाव को समाप्त करना चाहती थी।

अधिनियम के प्रावधान:

(1) **केन्द्रीय विधानपरिषद्** : में सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई। अब 69 सदस्य थे जिनमें से 9 स्थायी तथा 60 अतिरिक्त सदस्य होते थे।

(2) **गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद्**: में एक भारतीय सदस्य होगा। (S.P. सिन्हा प्रथम भारतीय सदस्य थे जिन्हें विधि सदस्य बनाया गया) (सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा)

(3) प्रान्तीय विधानपरिषद् में भी सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई। **जैसे:** बंगाल, मद्रास, बॉम्बे, U.P. में 50 सदस्य (United province) पंजाब, बर्मा, असम – 30 सदस्य

(4) विधानपरिषद् के सदस्यों को पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।
बजट पर बहस कर सकते थे लेकिन बजट पर मत–विभाजन नहीं करवाया जा सकता था।

(5) इन विषयों से सम्बन्धित प्रश्न नहीं पूछे जा सकते थे।
विदेशी मामले, देशी रियासते, रेल्वे, ऋण, ब्याज

(6) मुस्लिम को पृथक निर्वाचन दिया गया।

(7) भारत परिषद में भी एक भारतीय सदस्य की नियुक्ति की जायेगी।
(भारत परिषद् में पहले भी भारतीय सदस्य होते थे लेकिन अब अनिवार्य कर दिया गया था, 1907 में भारत परिषद् में 2 भारतीय सदस्य थे।)
सैय्यद हुसैन बिलग्रामी K.G. गुप्ता

अधिनियम की कमियाँ:

(1) मुस्लिमों को पृथक निर्वाचन देने से देश में साम्प्रदायिकता फैली। जो कालान्तर में द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त में बदल गई। जिससे देश का विभाजन हुआ।

(2) सामान्य मतदाता व मुस्लिम मतदाता के बीच अन्तर रखा गया। सामान्य मतदाता पहले प्रान्तीय विधानपरिषद् के सदस्यों को चुनता था तथा वे केन्द्रीय विधानपरिषद् के सदस्यों को चुनते थे। जबकि मुस्लिम मतदाता सीधे केन्द्रीय विधानपरिषद् के सदस्यों को चुनता था।

(3) गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में भारतीयों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया।

(4) सदस्यों को पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया था। परन्तु अभी भी वित्त सम्बन्धी मामलों में कोई प्रश्न नहीं पूछ सकते थे।

(5) गवर्नर जनरल (G.G.) के पास वीटो एवं अध्यादेश की शक्ति होती थी।

दिल्ली दरबार (1911)

– ब्रिटिश सम्राट **जॉर्ज पंचम** तथा उनकी रानी मैरी भारत आये।

(1) बंगाल विभाजन रद्द कर दिया था।

(2) राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली लाया जायेगा।

नोटः (इस समय बॉम्बे में गेटवे ऑफ इंडिया बनाया गया)

दिल्ली षड़यंत्र केस

– 1912 में राजधानी को दिल्ली ला रहे थे तो **रासबिहारी बोस** के नेतृत्व में चाँदनी चौक में **G.G. हॉर्डिग– II** पर बम फेंका गया।

– इस मुकदमें में 4 लोगों को फाँसी दी थी।

अवध बिहारी, अमीर चन्द्र, बालमुकुन्द, बसन्त कुमार

कामागाटामारू घटना (1914)

– कामागाटामारू एक जापानी जहाज था।

– सिंगापुर में रहने वाला गुरदीत सिंह 576 भारतीयों को लेकर कनाडा के वेंकुवर बन्दरगाह गया।

– कनाड़ा ने इन्हें प्रवेश नहीं दिया। लेकिन कनाड़ा में रहने वाले भारतीयों ने इसका विरोध किया तथा इनके पक्ष में आन्दोलन किया व तटीय समिति का गठन किया इसमें 3 सदस्य थे।

बलवन्त सिंह, रहीम हुसैन, सोहन लाल पाठक

– अमेरिका में रहने वाले भारतीयों ने भी इनके पक्ष में आन्दोलन किया था।

– जहाज वापस जापान के **याकोहामा बन्दरगाह** पहुँचा तब तक प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। अतः अंग्रेज सरकार ने जहाज को सीधा कलकत्ता लाने का आदेश दिया व बजबज बन्दरगाह (कलकत्ता) पर भगदड़ हो गई तथा 18 लोग मारे गये थे।

होमरूल आन्दोलन (1916)

– तिलक तथा एनी बिसेन्ट ने भारत में होमरूल आन्दोलन किया था।

– होमरूल आन्दोलन आयरलैण्ड से प्रेरित था। (एनी बिसेन्ट आयरलैण्ड की ही थी)

तिलकः

– **स्थापना** : अप्रैल 1916 (होमरूल लीग की स्थापना)

– बेलगाम (कर्नाटक)

– **अध्यक्षः** जोसेफ बेपतिस्ता

– **क्षेत्रः** महाराष्ट्र (बॉम्बे को छोड़कर)
कर्नाटक, मध्य प्रान्त, बरार

– तिलक ने भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की माँग की थी।

– तिलक ने स्थानीय माँगों को होमरूल आन्दोलन के साथ जोड़ दिया था।

– तिलक ने मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की माँग की।

– तिलक ने रचनात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ किये।
जैसेः हिन्दु–मुस्लिम एकता, छुआछूत निवारण, शिक्षा का प्रचार–प्रसार

तिलक के समाचार पत्रः
- केसरी (मराठी भाषा में)
- मराठा (अंग्रेजी भाषा में)

– **तिलक की किताबेंः**
- गीता रहस्य
- आर्कटिक होम ऑफ द वेदाज

– गोखले की संस्था सर्वेन्ट्स ऑफ द इण्डिया सोसाटी के सदस्य को तिलक की होमरूल लीग में शामिल नहीं किया जाता था।

एनी बिसेन्टः

- **स्थापना :** सितम्बर 1916
- **मुख्य केन्द्रः** अडियार
- **क्षेत्रः** तिलक के होमरूल लीग को छोड़कर शेष भारत
- **सचिवः** जॉर्ज अरेन्डूल
- जवाहर लाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी आदि एनी बिसेन्ट के साथ जुड़े।
- आन्दोलन आगे बढ़ने पर अंग्रेजों ने एनी बिसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया।
- इसके विरोध में सुब्रह्मण्यम अय्यर ने अपनी नाईटहुड की उपाधि छोड़ दी थी।

मोन्टेग्यू घोषणा (अगस्त घोषणा)

- 20 अगस्त 1917
- मोन्टेग्यू– भारत सचिव
  इसने घोषणा की कि जल्द ही भारतीयों को स्वशासन का अधिकार दिया जायेगा।
- एनी बिसेन्ट ने आन्दोलन वापस ले लिया तथा तिलक वेलेन्टाइन शिरोल पर मुकदमा करने के लिए लंदन चले गये। वहीं पर 1 अगस्त 1920 को तिलक की मृत्यु हो गई।

होमरूल लीग का महत्व :

(1) राष्ट्रीय आन्दोलन की एक दशक की निष्क्रियता को तोड़ा।
(2) एनी बिसेन्ट के कारण महिलाऐं आन्दोलन से जुड़ी। इससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।
(3) होमरूल आन्दोलन में विभिन्न समितियाँ बनाई गई थी इससे राष्ट्रीय आन्दोलन को संगठनात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ।
(4) विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये जिन्हें बाद में गाँधीजी ने अपनाया था।
(5) राष्ट्रीय आन्दोलन में दूसरी पंक्ति के नेता तैयार हुये।
जैसेः नेहरू, जिन्ना
(6) आन्दोलन के दबाव के कारण 1919 में अंग्रेजों ने सुधार किये।
(7) पहला बड़ा जनआन्दोलन था जो पूरे भारत में हुआ।

कमियाँः

(1) यह आन्दोलन शहरों तथा सीमित रहा था गाँवों में नहीं फैला था।
(2) गरमपंथियों के मुकाबले इनकी स्वशासन की माँग कम थी क्योंकि गरमपंथी 1906 से ही स्वराज की माँग कर रहे थे।
(3) रचनात्मक कार्यक्रम भी सैधान्तिक ही रहे उन्हें लागू नहीं किया जा सका।
(4) यह आन्दोलन अन्त में नेतृत्वविहीन हो गया था तथा बिना किसी स्पष्ट परिणाम के समाप्त हो गया था।
(5) भाषा के आधार पर राज्यों का गठन होने से क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिलता है।

लखनऊ अधिवेशन (1916)

नरम दल व गरम दल में समझौते के कारणः

(1) 1907 के सूरत विभाजन के बाद गरम पंथी राष्ट्रीय आन्दोलन में अलग–थलग हो गये थे तथा अब वे राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होना चाहते थे। इसके लिए कांग्रेस में शामिल होना जरूरी था। क्योंकि कांग्रेस राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र–बिन्दु थी।
(2) नरम पंथियों के 2 बड़े नेता गोपाल कृष्ण गोखले तथा फिरोज शाह मेहता की 1915 में मृत्यु हो गई थी।
(3) नरम पंथी निष्क्रिय होते जा रहे थे तथा अब उन्हें नई ऊर्जा की आवश्यकता थी।
(4) नरम पंथी 1909 के सुधारों से संतुष्ट नहीं थे।
(5) गरमपंथियों की विचारधारा बदल चुकी थी।
(6) प्रथम विश्वयुद्ध से भारतीय जनता परेशान थी (महँगाई से) तथा अब एक बड़े जन–आन्दोलन की माँग हो रही थी। तथा इसके लिए गरम दल व नरम दल का विलय जरूरी था।

मुस्लिम लीग व कांग्रेस में समझौते के कारण

मुस्लिम लीगः

(1) बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया था।

(2) अलीगढ़ कॉलेज को विश्वविद्यालय का दर्जा नहीं दिया गया।

(3) मुस्लिम लीग में उदारवादियों की संख्या बढ़ गई थी।
जैसेः मोहम्मद अली जिन्ना

(4) कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन की माँग को मान लिया था।

(5) प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की ब्रिटेन के खिलाफ लड़ रहा था तथा अंग्रेज तुर्की के खलीफा के पद को समाप्त करना चाहते थे इससे मुसलमानों में असन्तोष था।

कांग्रेस

(1) कांग्रेस हिन्दु–मुस्लिम एकता को स्थापित करना चाहती थी जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार बढ़े।

(2) कांग्रेस राष्ट्रीय आन्दोलन के धर्म निरपेक्ष स्वरूप को बनाये रखना चाहती थी।

(3) मुस्लिम लीग ने कांग्रेस की मांगे स्वीकार कर ली थी।
जैसेः स्वराज, विधानपरिषदों का विस्तार।

लखनऊ समझौते के प्रभावः

सकारात्मक प्रभावः

(1) हिन्दु–मुस्लिम एकता स्थापित होने से राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार बढ़ा तथा आन्दोलन का धर्म–निरपेक्ष स्वरूप स्थापित हुआ।

(2) समझौते के कारण ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाने में सफल रहे।

नकारात्मक प्रभावः

(1) पृथक निर्वाचन को स्वीकार करने से द्विराष्ट्रवाद का सिद्धान्त भी मान लिया जो आगे चलकर विभाजन का कारण बना।

(2) कांग्रेस ने मुसलमान का पृथक निर्वाचन स्वीकार कर लिया अतः अब 1919 में सिखो व एंग्लो इण्डियन को पृथक निर्वाचन दिया गया तो कांग्रेस विरोध नहीं कर सकती थी।

(3) मुस्लिम लीग को अधिक महत्व देने से हिन्दु संगठनों को प्रतिक्रिया करने का मौका मिला।

(4) हिन्दु–मुस्लिम एकता भी अल्प–काल के लिए स्थापित हुई थी जिसका की कोई दीर्घकालिक फायदा नहीं हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण
(1919 – 1947 ईस्वी)
(गाँधी युग)

गाँधी दर्शनः

- **सत्यः**
  - गाँधी के जीवन में सत्य का बड़ा महत्व था।
  - गाँधीजी सत्य को जीवन का अन्तिम साध्य मानते थे।
  - गाँधीजी जीवन को सत्य के साथ प्रयोग मानते थे।
  - गाँधीजी सत्य को ईश्वर के समान महत्व देते थे। तथा उन्होंने कहा था–सत्य ही ईश्वर है।
- **अहिंसाः**
  - मन, वचन, कर्म से हिंसा नहीं करने को अहिंसा कहा जाता है।
  - यह अहिंसा की नकारात्मक अवधारणा है।
  - गाँधीजी ने उसके अतिरिक्त अहिंसा की सकारात्मक अवधारणा भी दी उनके अनुसार प्रेम, त्याग, बलिदान, दयालुता, सहानुभूति, कर्त्तव्यपालन आदि भी अहिंसा के ही रूप हैं।

    गाँधीजी अहिंसा को वीरों का आभूषण मानते थे।

    गाँधीजी के अनुसार कायरता तथा हिंसा का चुनाव करना पड़े तो हिंसा का चुनाव करना चाहिए।

    गाँधीजी कर्त्तव्यपालन के लिए की गई हिंसा को भी अहिंसा बताते हैं।

    (**जैसेः** सैनिकों द्वारा देश की रक्षा हेतु की गई हिंसा)
- **सत्याग्रहः**
  - सत्याग्रह 2 शब्दों से मिलकर बना है।

    सत्य तथा आग्रह

    अर्थात्

    न्याय प्रयास करना
  - अर्थात् न्याय की स्थापना के लिए जो प्रयास किया जाता है वह सत्याग्रह कहलाता है।
  - यहाँ न्याय का अर्थ–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक न्याय से है।
  - गाँधीजी सत्याग्रह के लिए अहिंसा को आवश्यक मानते थे।
  - गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रही व्यक्ति वह होता है जो खुद को दुःख पहुँचाकर विरोधी का हृदय परिवर्तन करता है।
  - गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रही व्यक्ति, निर्भीक, कर्मठ, अहिंसक तथा ईश्वर में ध्यान रखने वाला होता है।
  - गाँधीजी ने सत्याग्रह हेतु उपवास व व्रत जैसे साधन दिये।
- **सर्वोदयः**
  - यह गाँधीजी का सामाजिक दर्शन है जो उन्होंने जॉन रस्किन की पुस्तक Unto this last से लिया था।
  - सर्वोदय 2 शब्दों से मिलकर बना है।

    सर्व तथा उदय

    ↓ → उत्थान (Upliftment)

    सभी का सभी प्रकार से
  - इसके अनुसार सभी लोगों का नैतिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान होना चाहिए।
  - गाँधीजी समाज में सबसे अन्त में खड़े व्यक्ति को भी मुख्य धारा में शामिल करना चाहते थे।

- **न्यासधारिता:**
  - यह गाँधीजी का आर्थिक दर्शन है।
  - इसके अनुसार पूँजीपतियों के पास जो सम्पत्ति है वह उनकी स्वयं की नहीं है वे उनके मालिक नहीं हैं वे उनके न्यासी है। क्योंकि उन्होंने यह सम्पत्ति समाज के सहयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से अर्जित की है। अतः उन्हें अपने अतिरिक्त लाभ को समाज के कल्याण में लगाना चाहिए।
  - इसके लिए सत्याग्रह के माध्यम से पूँजीपतियों का हृदय परिवर्तन करना चाहिए।
- **साधन–साध्य की पवित्रता**
  - साध्य की पवित्रता को लेकर सभी विद्वान एक मत होते हैं लेकिन साधन की पवित्रता को लेकर मतभेद है।
  - कार्लमार्क्स तथा चाणक्य के अनुसार उचित साध्य की प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन गाँधीजी साधन व साध्य दोनों की पवित्रता पर बल देते हैं।
    उनके अनुसार साधन व साध्य में वही सम्बन्ध होता है जो बीज तथा पेड़ में होता है।

राजनीतिक विचार:

- गाँधीजी लोकतंत्र के समर्थक थे। तथा लोकतंत्र में शक्तियों के विकेन्द्रीकरण के पक्ष में थे। उनके अनुसार सत्ता किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होनी चाहिए बल्कि उसका निचले स्तर तक विभाजन होना चाहिए।
- इसके लिए शक्तियाँ केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सरकारों में बाँटी जानी चाहिए।
- वर्तमान भारत की पंचायती राज प्रणाली गाँधीजी के इन्हीं विचारों के अनुरूप है।
- हालाँकि गाँधीजी सत्ता का विभाजन, व्यक्तिगत स्तर करते है। उनके अनुसार जब प्रत्येक व्यक्ति स्वअनुशासित व स्वनियंत्रित हो जायेगा तो राज्य की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। तथा प्रत्येक व्यक्ति स्वयं सत्ता का केन्द्र होगा।
  गाँधीजी इस आदर्श स्थिति को रामराज्य कहते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के बारे में गाँधीजी के विचार:

- गाँधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया था क्योंकि उनके अनुसार हिंसा का सहारा लेने पर सरकार आन्दोलन को कुचल सकती है।
- गाँधीजी राष्ट्रीय आन्दोलन को सत्याग्रह के मार्ग पर चलाना चाहते थे।
- गाँधीजी संघर्ष–विराम–संघर्ष की नीति में विश्वास रखते थे।
- गाँधीजी के अनुसार आम जनता लम्बे समय तक संघर्ष नहीं कर सकती है इसलिए आन्दोलन को एक बिन्दु पर ले जाकर रोक देना चाहिए। ताकि लोगों में निराशा का भाव नहीं आये। तथा अगले चरण हेतु ऊर्जा बनाई जा सके।
- आन्दोलन के विराम के दिनों में रचनात्मक कार्यक्रम किये जाने चाहिए। जैसेः हिन्दू, मुस्लिम एकता, छुआछूत निवारण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा का प्रचार–प्रसाद, खादी का प्रचार–प्रसार आदि।
- गाँधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में विभिन्न धाराओं में समन्वय का कार्य किया। जैसे नरम दल–गरम दल, हिन्दु तथा मुस्लिम, किसान तथा जमींदार, मजदूर तथा पूँजीपति।
- गाँधीजी ने सादगीपूर्ण जीवनशैली पर बल दिया था।
- गाँधीजी स्वावलम्बन पर अत्यधिक बल देते थे।
- गाँधीजी 1893 में अब्दुल्ला भाई का केस लड़ने के लिए द. अफ्रीका गये, गाँधीजी ने वहाँ पर रंग–भेद–नीति के खिलाफ सत्याग्रह किया था।
- गाँधीजी ने वहाँ पर टॉलस्टॉय तथा फीनिक्स आश्रम की स्थापना की।
- इण्डियन ऑपिनियन नामक समाचार पत्र निकाला।
- गाँधीजी ने बोअर (डच किसान) तथा जुलु विद्रोह में अंग्रेजों का साथ दिया इसलिए अंग्रेजों ने इनको बोअर तथा जुलु पदक दिये थे।

– 9 जनवरी 1915 को गाँधीजी भारत लौटे। (प्रवासी भारतीय दिवस मनाते हैं)
– गाँधीजी ने साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) की स्थापना की।
– गाँधीजी ने प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय युवाओं को ब्रिटिश फौज के साथ शामिल होने के लिए कहा।
इसलिए गाँधीजी को भर्ती करने वाला सार्जेण्ट कहा जमे लगा। अतः अंग्रेजों ने गाँधीजी को केसर–ए–हिन्द पदक दिया था।
– गाँधीजी ने 1916 में BHU उद्घाटन समारोह में भाग लिया यह गाँधीजी की भारत में पहली सार्वजनिक उपस्थिति थी।
– गाँधीजी ने 1916 के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया। यहाँ पर राजकुमार शुक्ल ने गाँधीजी से मुलाकात की एवं गाँधीजी को चम्पारन के नील किसानों की समस्या के बारे में बताया।

चम्पारन सत्याग्रह : (1917)

- **तिनकठिया प्रथा**
  – भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती करनी अनिवार्य थी।
  – गाँधीजी ने किसानों की स्थिति की जाँच की।
  – अंग्रेजों ने जाँच के लिए एक समिति का गठन किया उसमें गाँधीजी को सदस्य बनाया गया।
  – गाँधीजी ने किसानों को 25% जुर्माना वापस दिलवाया।
- **आन्दोलन में गाँधीजी के सहयोगी**
  – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, J.B. कृपलानी, मजरूल–उल–हक, नरहारे–पारिख
  – जूडिथ ब्राउन ने अपनी पुस्तक Gandhi's rice to power में इन सहयोगियों को उपठेकेदार कहा है।
  – इस आन्दोलन की सफलता पर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाँधीजी को महात्मा की उपाधि दी।

अहमदाबाद मिल मजदूर आन्दोलन : (1918)

– मिल मजदूरों ने प्लेग–भत्ता बन्द कर देने के खिलाफ आन्दोलन किया। तथा गाँधीजी ने समर्थन दिया।
– मिल मालिक अम्बालाल साराभाई ने मजदूरों को 20% प्लेग भत्ता दिया।
गाँधीजी ने इसके विरोध में मजदूरों के साथ भूख हड़ताल की।
– गाँधीजी ने मजदूरों को 35% भत्ता वापस दिलवाया। अम्बालाल सारभाई की बहन अनुसुइया बेन, साबरमती आश्रम में गाँधीजी की सहयोगी थी।

खेड़ा किसान आन्दोलन (1918 ईस्वी)

– गाँधीजी गुजरात किसान सभा के अध्यक्ष थे।
– फसलों के नुकसान के बावजूद ब्रिटिश सरकार किसानों से भू–राजस्व एकत्र कर रही थी।
– गाँधीजी ने इसके खिलाफ आन्दोलन शुरू किया और गाँधीजी ने किसानों को राजस्व का भुगतान न करने की सलाह दी।
– ब्रिटिश सरकार ने भू–राजस्व का संग्रह रोक दिया।

सहयोगी

(i) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(ii) शंकर लाल बैंकर
(iii) इन्दुलाल याग्निक
(iv) महादेव देसाई

जूडिय ब्राउन ने उन्हें अपनी पुस्तक में 'उपठेकेदार' कहा है।

रॉलेट एक्ट (1919 ईस्वी)

- 1917 ईस्वी में सर सिडनी रॉलेट के नेतृत्व में राजद्रोह समिति का गठन किया गया था।
- इस समिति की सिफारिश के आधार पर 'अराजक एवं क्रांतिकारी अपराध अधिनियम' पारित किया गया। इसे 'रॉलेट एक्ट' भी कहा जाता है।
- यह एक काला कानून था।
- इसे 'ना अपील, ना वकील, ना दलील' भी कहा जाता था।
- गाँधीजी ने इसके खिलाफ सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया।
- सत्याग्रह सभा की स्थापना बॉम्बे में की गई।
- 6 अप्रैल, 1919 ईस्वी को राष्ट्रीव्यापी हड़ताल की गई।
- गाँधीजी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की सलाह पर दिल्ली जा रहे थे। अंग्रेजों ने गाँधीजी को पलवल रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया और बॉम्बे वापस भेज दिया।
- 9 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार किया गया।
- इसके विरोध में उनके समथकों ने एक प्रदर्शन किया। समर्थक मिल्स इरविन से मिलने गए नेताओं को छोड़ने को कहा इरविन ने मना किया, तो आक्रमण भीड़ ने 5 अंग्रेजों को मार डाला।
- अंग्रेजों ने पंजाब में मार्शल लॉ लागू किया और अमृतसर का प्रशासन 'ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर' को सौंप दिया गया।

जलियावाला बाग हत्याकाण्ड (13 अप्रैल 1919)

- वैसाखी के मेले के कारण जलियावाला बाग में लोग इकट्ठे हो रखे थे।
- जनरल R. डायर ने वहाँ पर फायरिंग कर दी। हँसराज नामक भारतीय ने डायर का साथ दिया था।
- सरकारी आँकड़ो के अनुसार 379 लोग मारे गये थे। लेकिन वास्तविकता में मरने वालों की संख्या 1000 से अधिक थी।
- अंग्रेजों ने हत्याकाण्ड की जाँच हेतु **हन्टर कमेटी** का गठन किया उसमें 3 भारतीय सदस्य थे।
  चिमन लाल सीतलवाड़, जगत नारायण, सुल्तान अहमद
- गाँधीजी ने हन्टर कमेटी की रिपोर्ट के बारे में कहा था ''पन्ने दर पन्ने निर्लज्ज लीपापोती''
  कांग्रेस ने हत्याकाण्ड की जाँच के लिए मदनमोहन मालवीय समिति का गठन किया था।
  गाँधीजी, मोतीलाल नेहरू व C.R. दास भी इसके सदस्य थे।
  हाउस ऑफ लार्ड्स ने जनरल डायर को ब्रिटिश साम्राज्य का शेर बताया। तथा उसे मान की तलवार भेंट की।
- पंजाब की गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी ने जनरल डायर को सिंह की उपाधि तथा सरोपा भेंट किया।
- पंजाब के गवर्नर माइल ओ. डायर ने जनरल डायर को निर्दोष बताया था।
- 1940 में सरदार उद्यम सिंह ने इंग्लण्ड में माइकल ओ. डायर को मार दिया था।
- इस हत्याकाण्ड के विरोध में टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि छोड़ दी थी तथा शंकरन नायर ने गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद से इस्तीफा दे दिया था।

1919 का भारत परिषद् अधिनियम (मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार)

गृह सरकार में परिवर्तनः (ब्रिटेन में)

(1) भारत परिषद के खर्चे, भारत से समाप्त कर दिये गये तथा ब्रिटेन पर डाल दिये गये।

(2) भारत परिषद् के सदस्यों की संख्या कम कर दी। न्यूनतम–8, अधिकतम–12

(3) लंदन में हाई कमिश्नर की नियुक्ति की गई जो भारत सरकार को भेजे जाने वाले सामान की जाँच करता था इसका खर्चा भारत देगा।

भारत में परिवर्तन

- **केन्द्र सरकार में परिवर्तनः**

  (1) गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में 3/8 सदस्य भारतीय होंगे।
  इन्हें विधि, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे विषय दिये गये।

  (2) केन्द्र में 2 सदन बनाये जायेंगे

राज्य परिषद्	**केन्द्रीय विधानसभा**
सदस्यः 60	145

  (3) शक्तियों का विभाजन किया जायेगा।
  (I.) केन्द्रीय सूची
  (II.) प्रान्तीय सूची

  (4) सिक्खों तथा एंग्लो इंण्डियन को भी पृथक निर्वाचन दे दिया गया।

  (5) प्रत्यक्ष मताधिकार प्रारम्भ किया गया लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं था बल्कि सम्पत्ति के आधार पर था। इसमें भी महिलाओं को मताधिकार नहीं दिया।

- **प्रान्तों में परिवर्तन**

  प्रान्तों में द्वैध शासन लागू किया गया। तथा प्रान्तीय विषयों को 2 भागों में बाँट दिया गया।

  (i) आरक्षित

  (ii) हस्तान्तरित

  – वित्त, सिंचाई, व्यापार–वाणिज्य

  विषयः शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग

  आरक्षित विषयों पर गवर्नर द्वारा मनोनित मंत्री कानून बनाते थे।

  हस्तान्तरित विषयों पर जनप्रतिनिधि कानून बनाते थे।

1919 अधिनियम के कारण

– 1909 के अधिनियम में कहा गया था कि 10 वर्ष बाद भारत में नये सुधार किये जायेंगे।

– प्रथम विश्व युद्ध के कारण भारतीय जनता में असन्तोष था अतः असन्तोष समाप्त करने के लिए सुधार करने आवश्यक थे।

– होमरूल आन्दोलन में स्वशासन की माँग की गई थी जिससे भारतीयों में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ था।

– मॉन्टेग्यू घोषणा से भारतीयों की अपेक्षायें बढ़ गई थी।

– नरम पंथियों को संतुष्ट करने के लिए सुधार किये गये।

नोटः सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने 1919 में अखिल भारतीय उदारवादी संघ का गठन कर लिया था।

1919 के अधिनियम की कमियाँ :

(1) गर्वनर जनरल की कार्यकारी परिषद् में अभी भी भारतीयों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं था।
(2) पृथक निर्वाचन को न केवल जारी रखा गया बल्कि उसे और बढ़ा दिया गया।
(3) सार्वभौमिक मताधिकार नहीं दिया गया।
(4) प्रान्तों में द्वैध शासन लागू कर दिया गया।
(5) G.G. के पास वीटो तथा अध्यादेश के अधिकार थे।

द्वैध शासन की कमियाँ:

(1) द्वैध शासन में विषयों का बँटवारा अवैज्ञानिक था। क्योंकि सिंचाई आरक्षित तथा कृषि हस्तान्तरित विषय था।
(2) वित्त आरक्षित विषय था अतः हस्तान्तरित विषय के मंत्रियों को भी उस पर निर्भर रहना पड़ता था।
(3) आरक्षित विषय के मंत्री केवल गवर्नर के प्रति उत्तरदायी थे तथा हस्तान्तरित विषय के मंत्री जनता के प्रति उत्तरदायी थे।
(4) प्रशासनिक अधिकारी भी हस्तान्तरित विषय के मंत्रियों का सहयोग नहीं करते थे।
(5) जनप्रतिनिधियों में मंत्री बनने की प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन कमजोर हुआ।

ख़िलाफत आन्दोलन

– प्रथम विश्वयुद्ध के बाद तुर्की के खलीफा के साथ ब्रिटेन ने सीवर्स की संधि की थी।
इसके तहत खलीफा के ऑटोमन साम्राज्य को समाप्त करना था। अतः इसके खिलाफ भारतीयों मुसलमानों में गुस्सा था।
– शौकत अली एवं मुहम्मद अली दो भाईयों के नेतृत्व में इस आन्दोलन को शुरू किया गया।
– कालान्तर में इसका नेतृत्व गाँधीजी को सौंप दिया गया।
– गाँधीजी व तिलक ने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया था जबकि लाला लाजपत राय तथा मदनमोहन मालवीय ने इसका विरोध किया था तथा इसे विशुद्ध धार्मिक मुद्दा बताया था।
– 31 अगस्त 1920 को खिलाफत आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन का हिस्सा बन गया।
– 1924 में कमाल मुस्तफा पाशा के नेतृत्व में तुर्की में क्रान्ति हो गई। तथा खलीफा के पद को समाप्त कर दिया गया।

असहयोग आन्दोलन

कारण:

(1) स्वदेशी आन्दोलन के बाद कोई बड़ा जनआन्दोलन नहीं हुआ था अतः जनआन्दोलन की आवश्यकता थी।
(2) लखनऊ अधिवेशन में नरम दल व गरम दल का विलय हो गया था अतः लोगों की अपेक्षाऐं बढ़ गई थी।
(3) होमरूल आन्दोलन के कारण राजनीतिक चेतना का विकास हुआ था। विभिन्न समितियों के निर्माण से आन्दोलन को संगठनात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ तथा आन्दोलन परिणामविहीन था अतः जनता में असन्तोष था।
(4) प्रथम विश्वयुद्ध के कारण महँगाई बढ़ गई थी, विश्वयुद्ध के दौरान युवाओं को सेना में भर्ती किया गया लेकिन बाद में उन्हें हटा दिया गया।
प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की कई स्थानों पर हार हुई। इससे उनकी अपराजेयता का भ्रम टूटा।
प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन ने यूरोप में लोकतंत्र को समर्थन दिया लेकिन उसे भारत में लागू नहीं किया इससे बुद्धिजीवी वर्ग निराश था।
(5) रोलेट एक्ट
(6) जलियाँवाला हत्याकाण्ड
(7) हन्टर कमेटी की रिपोर्ट
(8) खिलाफत आन्दोलन के कारण हिन्दु–मुस्लिम एकता स्थापित हुई।
(9) 1919 के अधिनियम से भारतीय सन्तुष्ट नहीं थे।

(10) हमें गाँधीजी के रूप में एक चमत्कारिक नेतृत्व प्राप्त हो गया था।

- 1 अगस्त 1920 को तिलक की मृत्यु के साथ ही गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन शुरू कर दिया। तथा गाँधीजी ने कहा कि 1 वर्ष के अन्दर हम स्वराज प्राप्त कर लेंगे।
- कलकत्ता का विशेष अधिवेशन (कांग्रेस), सितम्बर 1920

  अध्यक्षः लाला लाजपत राय

  गाँधीजी ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया। C.R. दास ने उसका विरोध किया लेकिन मोतीलाल नेहरू व अली बन्धुओं के सहयोग से गाँधीजी ने प्रस्ताव पारित करवा लिया।

  नागपुर का नियमित अधिवेशन (कांग्रेस) (दिसम्बर, 1920)

  अध्यक्षः वी. राघवाचारी

  C.R. दास ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया।

  C.R. दास व उनकी पत्नी बसन्ती देवी, असहयोग आन्दोलन में सबसे पहले गिरफ्तार हुये थे।

  गाँधीजी ने जुलू, बोअर तथा केसर–ए–हिन्द पदक लौटा दिये तथा जमनालाल बजाज ने राय बहादुर की उपाधि लौटा दी थी।
- विदेशी कपड़ों का बहिष्कार सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ।

  ताड़ी की दुकानों पर धना लोकप्रिय हुआ जबकि यह मूल कार्यक्रम में नहीं था।
- 5 फरवरी 1922 को चौरा–चोरी (U.P.) नामक स्थान पर उग्र भीड़ ने पुलिस थाने को जला दिया तथा इसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गये। इससे असहयोग आन्दोलन को गाँधीजी ने वापस ले लिया।
- 12 फरवरी को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक थी (बारदोली में) तथा कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन समाप्ति की घोषणा की।

असहयोग आन्दोलन वापस लेने के कारण

(1) आन्दोलन हिंसक हो गया था तथा गलत हाथों में जा सकता था और सरकार द्वारा इसे कुचला जा सकताथा।

(2) गाँधीजी को अपने सत्य व अहिंसा जैसे मूल्य स्वराज से भी अधिक प्रिय थे। तथा गाँधीजी जानते थे कि हिंसा रूपी गलत साधन के प्रयोग में स्वराजरूपी उचित साध्य नहीं प्राप्त करना चाहिए।

(3) संघर्ष–विराम–संघर्ष की रणनीति के तहत आन्दोलन को एक ऐसे बिन्दु पर रोकना जरूरी था ताकि लोगों में निराशा नहीं आये तथा उनकी ऊर्जा बनी रहे।

(4) आन्दोलन के प्रारम्भ में गाँधीजी ने कहा था कि एक वर्ष में स्वराज प्राप्त कर लेंगे। लेकिन एक वर्ष से अधिक समय हो जाने पर भी ब्रिटिश सरकार ने इस बारे में कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई।

(5) 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन के बाद से ही गाँधीजी पर 'कर नहीं देने के आन्दोलन' का दबाव बनता जा रहा था। तथा गाँधीजी जानते थे कि इन परिस्थितियों में ऐसा करना सम्भव नहीं है।

(6) आन्दोलन के दौरान भारतीय समाज के अर्न्तविरोध उभरने लग गये थे। (किसान vs जमींदार) (मजदूर vs पूँजीपति)

(7) खिलाफत आन्दोलन के कारण मुस्लिम असहयोग आन्दोलन से जुड़े थे लेकिन तुर्की में खलीफा के खिलाफ क्रान्ति के बाद उनकी संख्या कम हो गई थी।

असहयोग आन्दोलन का महत्वः

(1) भारत का पहला बड़ा जन आन्दोलन था जिसमें सभी वर्गों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। इसमें महिलाओं ने भी इसमें भाग लिया था।

(2) असहयोग आन्दोलन सम्पूर्ण भारत में हुआ था।

(3) राष्ट्रीय आन्दोलन को सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे नये उपकरण मिले।

(4) विदेशी वस्तुओं के बहिश्कार से हमारे स्वदेशी उद्योग–धन्धों को फायदा हुआ।

(5) अनेक स्वदेशी शिक्षण–संस्थाओं की स्थापना की गई।

(6) असहयोग आन्दोलन में मुस्लिम बड़ी संख्या में जुड़े थे। इसके बाद के आन्दोलन में ऐसा नहीं देखा गया।

असहयोग आन्दोलन की कमियाँः

(1) यह आन्दोलन कई स्थानों पर हिंसक हो गया था
जैसेः मोपला विद्रोह, 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा के समय दंगे (बॉम्बे), चौरा–चौरी घटना।

(2) हिन्दु–मुस्लिम एकता भी आन्दोलन के प्रारम्भ में स्थापित हुई। कालान्तर में मुस्लिमों की संख्या कम हो गई थी।

(3) गाँधीजी ने कहा था कि 1 वर्ष में स्वराज प्राप्त कर कर लेंगे। लेकिन स्वराज को परिभाषित नहीं किया था। तथा ना ही स्वराज प्राप्त हो सका था।

(4) विदेशी बहिष्कार में भी केवल वस्त्रों का ही बहिष्कार ही लोकप्रिय हुआ था।

नोटः

- C.R. दास ने चुनावों के बहिष्कार का विरोध किया था। जबकि लाला–लाजपत राय ने स्कूलों व कॉलेजों के बहिष्कार का विरोध किया था।
- राजद्रोह की धारा 124 (A) लगाकर, गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया।

गया अधिवेशन (1922)

अध्यक्षः C.R. दास

- C.R. दास ने चुनाव में भाग लेने का प्रस्ताव रखा। लेकिन गाँधीजी के समर्थकों के कारण यह प्रस्ताव खारिज हो गया। तथा कांग्रेस का एक बार फिर 2 दलों में विभाजन हो गया।

परिवर्तनवादी समर्थकः

C.R दास, मोतीलाल नेहरू, विठ्ठल भाई पटेल

विचारधाराः इनके अनुसार हमें चुनाव में भाग लेना चाहिए तथा विधान–मण्डल में पहुँच कर अंग्रेज सरकार की गलत नीतियों का विरोध करना चाहिए।

इनका मानना था कि यदि हम चुनाव में भाग नहीं लेंगे। तो गलत लोग विधानमण्डल में पहुँच जायेंगे एवं वे अंगेज सरकार के समर्थक होंगे।

अपरिवर्तनवादी समर्थकः

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, C. राजगोपालाचार्य, वल्लभ भाई पटेल

विचारधाराः

- ये गाँधीजी के समर्थक थे तथा चुनावों का बहिष्कार करना चाहते थे इनके अनुार चुनाव में भाग लेने से हम सरकार का हिस्सा बन जायेंगे तथा सरकार की गलत नीतियों का विरोध नहीं कर पायेंगे।
  इनके अनुसार आन्दोलन के विराम के दिनों में गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना चाहिये।

स्वराज पार्टी

- 1 जनवरी 1923 को इलाहाबाद में स्वराज पार्टी का गठन हुआ।
  अध्यक्षः C.R. दास
  महासचिव : मोतीलाल नेहरू
- स्वराज पार्टी ने 1923 के चुनावों में भाग लिया। तथा मध्य प्रान्त में उसे पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ।
- बंगाल, बॉम्बे एवं U.P. में इसे सर्वाधिक सीटे प्राप्त हुई।
- केन्द्रीय विधानसभा में 101 में से 42 सीटे प्राप्त की।
- विठ्ठल भाई पटेल को केन्द्रीय विधानसभा का अध्यक्ष बनाया।
- ली कमीशन मुडिमैन समिति ट्रेड डिस्प्यूट बिल पब्लिक सेफ्टी बिल
  (उच्च पदों पर उच्च जाति के लोगों की नियुक्ति का विशेष)
  (द्वैध शासन को जारी रखने का विरोध)
  स्वराज पार्टी ने इनका विरोध किया था।

स्वराज पार्टी के पतन के कारणः

(1) 1925 में C.R. दास का निधन हो गया था तथा इसके बाद स्वराज पार्टी नेतृत्वविहीन हो गई थी।

(2) कांग्रेस ने स्वराज पार्टी का समर्थन नहीं किया था।

(3) स्वराज पार्टी ने विधानमण्डल में सरकार की कई गलत नीतियों का विरोध किया था तथा कई जनकल्याणकारी कार्य भी किये थे परन्तु इन्हें जनता तक नहीं पहुँचा पाये।

(4) स्वराज पार्टी के सदस्यों में मंत्री बनने की प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई तथा ये आपस में लड़ने लगे।

(5) स्वराज पार्टी ने अलग–अलग विचारधारा के लोगों को लेकर गठबंधन बना लिया था जो सफल नहीं हुआ।

साइमन कमीशन या श्वेत कमीशन

– भारत में संवैधानिक स्थिति की जाँच करने के लिए साइमन कमीशन का गठन किया गया।

– इसमें 7 सदस्य थे। तथा इनमें से एक भी भारतीय नहीं था इसलिए इसेश्वेत कमीशन कहा जाता है। तथा भारतीयों ने इसका विरोध किया।

– 1919 के अधियमानुसार भारत में 10 वर्ष बाद संवैधानिक स्थिति की जाँच की जानी थी लेकिन आयोग का गठन 2 वर्ष पूर्व ही कर दिया गया क्योंकि।

  (1) ब्रिटेन में कंजरवेटिव पार्टी सत्ता में थी। तथा उसे आगामी चुनाव में हार का खतरा था तथा नई लेबर पार्टी भारत में अधिक सुधार कर सकती थी।

  (2) भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन चल रहा था अतः उसे रोकने/दबाने, व नरमपंथियों को संतुष्ट करने के लिए आयोग का गठन किया गया।

– लखनऊ में जवाहर लाल नेहरू तथा गोविन्द वल्लभ पंथ ने साइमन कमीशन का विरोध किया।

– लाहौर में लाला लाजपतराय ने साइमन कमीशन का विरोध किया

– पुलिस लाठीचार्ज में लालाजी शहीद हो गये

लालाजी ने कहा था–

"मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के ताबूत की कील साबित होगी।"

साइमन कमीशन का समर्थन करने वाली पार्टियाँः

1. मद्रास–जस्टिस पार्टी
2. यूनिनिस्ट पार्टी – (पंजाब)
3. मुस्लिम लीग का शफी गुट

साइमन कमीशन की सिफारिशेंः

(1) ब्रिटिश प्रान्त तथा देशी रियासतों को मिलाकर **अखिल भारतीय संघ** बनाये जाये।

(2) भारत में संघात्मक व्यवस्था लाग की जाये।

(3) प्रान्तों में द्वैध शासन समाप्त किया जाये तथा उन्हें स्वायत्ता दी जाये।

(4) केन्द्र में भारतीयों को कोई उत्तरदायित्व नहीं दिया जाये।

(5) पृथक निर्वाचन गलत है लेकिन फिर भी इसे जारी रखा जाये।

(6) बर्मा को भारत से अलग किया जाये।

(7) सिंध को नया राज्य बनाया जाये।

(8) मताधिकार का दायरा बढ़ाया जाना चाहिए लेकिन सार्वभौमिक मताधिकार नहीं होना चाहिए।

नेहरू रिपोर्ट (1928)

– भारत सचिव लॉर्ड बिरकैन हेड ने भारतीयों को संविधान बनाने की चुनौती दी। हमने मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में समिति का गठन किया।

सुभाष चन्द्र बोस भी इस समिति के सदस्य थे।

सिफारिशेः

(1) ब्रिटिश प्रान्त तथा देशी रियासतों को मिलाकर अखिल भारतीय संघ बनाया जाये।
(2) भारत में संघात्मक व्यवस्था लागू की जाये।
(3) प्रान्तों में द्वैध शासन समाप्त कर उन्हें स्वायत्ता दी जाये।
(4) अवशिष्ट शक्तियाँ केन्द्र को दी जानी चाहिए।
(5) भारत को ''डोमिनियन स्टेट'' बनाया जाये।
(6) बर्मा को भारत से अलग किया जाये।
(7) सिंध को नया राज्य बनाया जाये।
(8) पृथक निर्वाचन समाप्त किया जाये। तथा इसके स्थान पर सामान्य आरक्षण दिया जाये।
(9) भारतीयों को मूल अधिकार दिये जाने चाहिए।
(10) भारतीयों को सार्वभौमिक मताधिकार दिया जाना चाहिए।
(11) भारत में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की जाये।

– मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, सिख महासभा ने नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया।
ज्वाहर लाल नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस ने डोमिनियन स्टेट की माँग का विरोध किया। तथा इन्होंने नई पार्टी इंडिपेडेस फॉर इंडिया लीग का गठन किया।

– नेहरू रिपोर्ट के विरोध में जिन्ना ने अपना 14 सूत्रीय माँग–पत्र प्रस्तुत किया।
इसमें अवशिष्ट शक्तियाँ प्रान्तों को देने की बात कही गई।

लाहौर अधिवेशन (1929)

कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलायेगी।

गाँधीजी की 11 सूत्री माँगे (जनवरी, 1930)

– गाँधीजी ने G.G. लॉर्ड इरविन के सामने अपनी 11 माँगे रखी।

(1) रुपये का अवमूल्यन किया जाना चाहिए।
(2) भू–राजस्व में कमी लाई जाये।
(3) सैनिक व्यय में कमी लाई जाये।
(4) उच्च वेतन वाली नौकरियों की संख्या में कमी की जाये।
(5) नमक कानून समाप्त किया जाये।
(6) शराबबंदी की जाये।
(7) तटकर अधिनियम लागू किया जाये।
(8) विदेशी कपड़े पर विशेष आयात शुल्क लगाया जाये।
(9) भारतीयों को आत्मरक्षा के लिए हथियार रखने की अनुमति दी जाये।
(10) गुप्तचर व्यवस्था बन्द कर दी जाये।
(11) राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाये।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

कारण:

(1) **संघर्ष–विराम–संघर्ष** की रणनीति के तहत असहयोग आन्दोलन को एक लम्बा समय बीत चुका था इसलिए अब एक नए जन–आन्दोलन की आवश्यकता थी।
(2) स्वराज पार्टी
(3) साइमन कमीशन
(4) नेहरू रिपोर्ट को नजरअन्दाज किया जाना
(5) लाहौर अधिवेशन
(6) क्रान्तिकारी आन्दोलन
(7) समाजवादी आन्दोलन
(8) कठोर नमक कानून
(9) 1929 की वैश्विक आर्थिक मंदी
(10) तात्कालिक कारण गाँधीजी की 11 सूत्रीय माँगों को ठुकरा दिया गया।

दांडी यात्रा (12 मार्च–6 अप्रैल, 1930)

– 78 सहयोगियों को लेकर साबरमती आश्रम से यात्रा प्रारम्भ की इनमें अमेरिकी पत्रकार वेब मिलकर भी शामिल थे।
– दांडी यात्रा से सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।
– C. राजगोपालाचारी ने त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक की यात्रा की।
– के.केलप्न व टी. माधवन ने कालीकट से प्यान्नूर तक की यात्रा की।
– असम के लोगों ने सिल्हट से नोआखली तक की यात्रा की तथा इन सभी यात्रा में नमक कानून तोड़ा गया।
– बिहार में चौकीदारी कर के खिलाफ आन्दोलन किया गया।
– मध्य प्रान्त में वन कानून के खिलाफ आन्दोलन किया गया।
– यू.पी तथा गुजरात में कर नहीं देने का आन्दोलन चलाया गया।
– महाराष्ट्र में सरोजनी नायडू के नेतृत्व में **धरासना सत्याग्रह** किया गया।
– असम में **कनिंघम सर्कुलर** (अभिभावकों का चरित्र प्रमाण का जमा करवाना) का विरोध किया गया।
– नागालैण्ड में मदोनांग ने जियालरंग आन्दोलन चलाया मदोनांग में होर्का पंथ की स्थापना की।
मदोनांग की 13 वर्षीय बहिन गेडिनेल्यू को गिरफ्तार कर लिया गया।
जवाहर लाल नेहरू ने गेडिनेल्यू को रानी की उपाधि दी थी।
– पेशावर में चन्द्र सिंह गढ़वाली नामक सैनिक ने आन्दोलनकारियों पर गोली चलाने से मना कर दिया।
– उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमान्त गाँधी) ने खुदाई खिदमतगार (लाल कुर्ती दल) की स्थापना की। (पत्रिका–पख्तून (दसरोजा)

गाँधी–इरविन समझौता : (दिल्ली समझौता)

(5 मार्च, 1931)

(1) कांग्रेस सविनय अवजा आन्दोलन वापस लेगी।
(2) कांग्रेस दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।
(3) समुद्र तट के पास रहने वाले लोग नमक बना सकते हैं।
(4) जब्त सम्पत्ति को वापस दिया जायेगा (यदि उसे तीसरे पक्ष को नहीं बेचा गया हो)
(5) कांग्रेस ने पुलिस अत्याचार की जाँच की माँग को वापस ले लिया।
(6) राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जायेगा।

गोलमेज सम्मेलन

- ब्रिटिश सरकार द्वारा लंदन में 3 गोलमेज सम्मेलन आयोजित किये गये। (1930, 1931, 1932)
- कांग्रेस ने (1931) केवल दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था।
- कांग्रेस की तरफ से केवल गाँधीजी ने भाग लिया था।
  गाँधीजी राजपूताना नामक जहाज पर लंदन गये थे।
- सरोजनी नायडू तथा मदन मोहन मालवीय ने व्यक्तिगत रूप से भाग लिया था।
- फ्रेंक मोरेस ने गाँधीजी को लंदन यात्रा का वर्णन किया था।
- गोलमेज सम्मेलन से लौटकर गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस शुरू कर दिया। (1932)
- 1934 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त कर दिया गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के महत्वः

(1) पहला अखिल भारतीय आन्दोलन था जो असम से लेकर उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त तक फैल गया था।
(2) इस आन्दोलन में भारत के सभी वर्गों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। यहाँ तक कि मजदूर भी आन्दोलन में शामिल हुये थे।
(3) यह आन्दोलन ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोकप्रिय हुआ था।
(4) क्रान्तिकारियों की ऊर्जा सकारात्मक रूप से अभिव्यक्त हुई।
(5) पहला आन्दोलन था जो पूर्ण स्वराज के लक्ष्य के साथ प्रारम्भ हुआ था।
(6) आन्दोलन के दबाव के कारण अंग्रेजों को बराबरी का गाँधी–इरविन समझौता करना पड़ा।
(7) 1935 का भारत शासन अधिनियम (GOI, Act) आन्दोलन के दबाव का ही नतीजा था।

साम्प्रदायिक पंचाट (16 अगस्त 1932)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मेक्डॉनल्ड द्वारा जारी किया गया। इसके तहत दलितों को पृथक निर्वाचन दिया गया।
- गाँधीजी उस समय पूना की यरवदा जेल में थे। गाँधीजी ने इसके खिलाफ 20 सितम्बर से भूख हड़ताल प्रारम्भ की।

पूना समझौताः

- 26 सितम्बर, 1932 (गाँधीजी व दलित नेता भीमराव अम्बेडकर के बीच)
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचार्य तथा पुरुषोत्तम दास टंडन ने यह समझौता करवाया था।
- अम्बेडकर ने पृथक निर्वाचन को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने सामान्य आरक्षण को स्वीकार किया तथा इसके लिए सीटें बढ़ाकर 71 से 148 कर दी गई।
- टैगोर ने इस समझौते के लिए गाँधीजी को धन्यवाद दिया था।
- गाँधीजी ने दलितो को हरिजन नाम दिया। हरिजन नामक समाचार पत्र प्रारम्भ किया। अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की।
- इसके बाद गाँधीजी ने अपना जीवन हरिजनों के उत्थान में लगा दिया।

नोटः अम्बेडकर की पार्टियाँः

- ऑल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन, ऑल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन, इंडिपेंडेट लेबर पार्टी, ऑल इण्डिया क्लास कॉन्फ्रेन्स (एम.सी. राजा), ऑल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास लीग (जगजीवन राम)

1935 का भारत शासन अधिनियम

(1) गृहसरकार में परिवर्तन

– भारत परिषद् को समाप्त कर दिया गया।

– भारत सचिव की सहायता के लिए सलाहकारी समिति बनाई जायेगी लेकिन इसकी सलाह मानना या न मानना भारत सचिव पर निर्भर होगा।

(2) भारत सरकार में परिवर्तनः

केन्द्र में परिवर्तनः

(1) ब्रिटिश प्रान्त व देशी रियासतों को मिलाकर अखिल भारतीय संघ बनाया जायेगा।
इसमें ब्रिटिश प्रान्तों का शामिल होना अनिवार्य था तथा देशी रियासतों का शामिल होना वैकल्पिक था।
(राजाओं ने रूचि नहीं ली अतः संघ नहीं बन सका)

(2) केन्द्र में 2 सदन होंगे

राज्य परिषद्	**केन्द्रीय विधानसभा**
सदस्य 260 (156 + 104)	375 (250 + 125)
↓	↓
ब्रिटिश प्रान्त	देशी रियासत (40%)
	देशी रियासत (33%)

(3) कार्यकारी परिषद् में 3 सदस्यों को GG मनोनीत करेगा तथा Lo सदस्य भारतीय होंगे।

(4) केन्द्र में द्वैध शासन लाग किया जायेगा (लागू नहीं हो पाया)

(5) शक्तियों का विभाजन किया जायेगा तथा केन्द्रीय, प्रान्तीय, समवर्ती सूची होगी।

(6) अवशिष्ट शक्तियाँ G.G. को दी जाती थी।

(7) G.G. को वीटो एवं अध्यादेश का अधिकार दिया गया।

(8) बर्मा को भारत से अलग किया जायेगा।

(9) सिंध, उड़ीसा व उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त, नये राज्य बनाये जायेंगे।

(10) दलितों को पृथक निवार्चन दिया गया।

(11) RBI की स्थापना की जायेगी।

(12) UPSC की स्थापना की जायेगी।

(13) संघीय न्यायालय की स्थापना की जायेगी। (केन्द्र–राज्य सम्बन्ध देखता था)

प्रान्तों में परिवर्तनः

– प्रान्तों का द्वैध शासन समाप्त कर दिया गया तथा उन्हें स्वायत्ता दे दी गई।

– 11 में से 6 प्रान्तों में 2 सदन बनाये गये।
बॉम्बे, मद्रास, बंगाल, असम, यू.पी., बिहार

1935 के अधिनियम की कमियाँ

(1) अखिल भारतीय संघ में देशी रियासतों का शामिल होना स्वैच्छिक कर दिया गया था।

(2) देशी रियासतों की जनसंख्या 24% थी लेकिन राज्य परिषद् में 40% तथा केन्द्रीय विधानसभा में 33% सीटे दी गई।

(3) केन्द्र में द्वैध शासन लागू किया गया।

(4) अवशिष्ट शक्तियाँ गवर्नर जनरल को दी गई तथा अभी भी G.G. के पास वीटो व अध्यादेश के अधिकार थे।

(5) दलितों को पृथक निर्वाचन दिया गया था।

(6) सुप्रीम कोर्ट स्थापित नहीं किया गया।

(7) प्रान्तों को स्वायत्ता दी गई थी लेकिन अभी भी गवर्नर के पास अत्यधिक शक्तियाँ थी।

(8) सार्वभौमिक मताधिकार नहीं दिया गया था।
नेहरूजी ने अधिनियम को उस गाड़ी के समान बताया था जिसमें इंजन नहीं है तथा ब्रेक ज्यादा हैं।

1937 के चुनाव

– 11 में से 8 प्रान्तों में कांग्रेस ने सरकार बनाई।
– पंजाब, बंगाल, सिंध में कांग्रेस की सरकार नहीं बनी थी।
पंजाब–यूनिनिस्ट पार्टी (सिकन्दर हयात खान, खिज्र हमात खान)
बंगाल – बंगाल कृषक पार्टी (फजल–उल–हक)

सिंध–गठबंधन

– मुस्लिम लीग की एक भी जगह सरकार नहीं बनी।
– संयुक्त प्रान्त में चुनाव से पहले कांग्रेस व मुस्लिम लीग का गठबन्धन था लेकिन चुनाव के बाद कांग्रेस ने मुस्लिम लीग को सरकार में शामिल नहीं किया।
– जिन्ना ने आरोप लगाया कि कांग्रेस शासित राज्यों में मुसलमानों पर अत्याचार होते हैं तथा इसकी जाँच के लिए शरीफ समिति तथा पीरपुर समिति का गठन किया।
– दूसरा विश्वयुद्ध शुरू होने पर अंग्रेजों ने भारतीयों को बिना पूछे इसमें शामिल कर दिया।
15 नवम्बर 1939 को कांग्रेस की सरकार ने सभी 8 प्रान्तों में इसके विरोध में पदो से इस्तीफे दे दिये थे।
मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर 1939 को मुक्ति दिवस के रूप में बनाया।

मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन (1940)

अध्यक्षः जिन्ना

– पहली बार मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान की माँग की।
– 1930 में कवि इकबाल ने सबसे पहले अलग मुस्लिम देश की माँग की थी।
– 1933 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली ने इस देश का नाम पाकिस्तान बताया।
(Now or Never नामक पर्चा में यह कहा था)

अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त 1940)

– भारत के G.G. लिनलिथगो द्वारा अगस्त प्रस्ताव पेश किया गया।

प्रावधान :

(1) युद्ध परामर्शदात्री समिति का गठन किया जायेगा।
(2) कार्यकारी परिषद् में भारतीयों का बहुमत कर दिया जायेगा।
(3) भारत को डोमिनियन स्टेट बना दिया जायेगा।
(4) भारतीयों को संविधान बनाने के लिए आमंत्रित किया जायेगा।
(5) अल्पसंख्यकों को विश्वास में लिये बिना कोई समझौता नहीं होगा।

सकारात्मक प्रावधान :

(1) युद्ध परामर्शदात्री समिति का गठन किया।
(2) भारत को डोमिनियन स्टेट बना दिया जायेगा।
(3) भारतीय अपना संविधान स्वयं बनायेंगे।

नकारात्मक प्रावधान

(1) भारत 1929 से पूर्ण स्वराज की माँग कर रहा था जबकि अंग्रेज अभी भी डोमिनियन स्टेट ही दे रहे थे।
(2) कार्यकारी परिषद् में इससे अच्छा प्रस्ताव तो 1939 के अधिनियम में था।
(3) अगस्त प्रस्ताव द्वारा अल्पसंख्यकों को वीटो दे दिया गया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन (1940)

– इसे दिल्ली चलो आन्दोलन भी कहा जाता है।
– गाँधीजी के अनुसार हिटलर एक फासीवादी ताकत था तथा मानव समुदाय के लिए खतरा था।
चूँकि ब्रिटेन हिटलर के खिलाफ लड़ रहा था अतः हमें ब्रिटेन को शक्ति को कम नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे हिटलर जीत सकता है।
– वामपंथियों के अनुसार ब्रिटेन तथा हिटलर दोनों फासीवादी ताकते हैं तथा अपने साम्राज्य विस्तार के लिए लड़ रही है। अतः भारत को इस मौके का फायदा उठाना चाहिए तथा अंग्रेजी सरकार के खिलाफ एक बड़ा आन्दोलन करना चाहिए।
गाँधीजी ने अंग्रेजों की शक्ति को कम किये बिना तथा अव्यवस्था उत्पन्न किये बिना व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन चलाया गया इसके माध्यम से विश्व समुदाय को संदेश दिया कि ब्रिटेन जिन लोकतांत्रिक मूल्यों की वकालत यूरोप में करता हैं उन्हें भारत में लागू नहीं कर रहा है।
– पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) से व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था।
– प्रथम सत्याग्रही 1. विनोबा भावे, 2. जवाहर लाल नेहरू, ब्रह्मदत्त

क्रिप्स मिशन 1942

– एक सदस्यीय आयोग

प्रावधान :

(1) भारत को ऐसा डोमिनियन स्टेट बनाया जायेगा जिसकी विदेश नीति स्वतंत्र होगी। भारत चाहे तो राष्ट्रमण्डल का सदस्य बन सकता है।
(2) संविधान सभा का गठन किया जायेगा।
प्रान्तों के निचले सदन के सदस्यों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति द्वारा संविधान सभा का चुनाव किया जायेगा।
प्रान्त चाहे तो अपना संविधान अलग बना सकते हैं।
(3) अल्पसंख्यकों के लिए अलग से समझौता किया जायेगा।
(4) यह सब युद्ध समाप्त होने के बाद दिया जायेगा क्योंकि तब तक भारत की जिम्मेदारी ब्रिटेन की है।

सकारात्मक प्रावधानः

(1) भारत को ऐसा डोमिनियन स्टेट बना रहे थे जिसकी विदेश नीति स्वतंत्र होगी।
(2) संविधान सभा के गठन की प्रक्रिया दी गई थी।
(3) अल्पसंख्यकों को दिया गया वीटो वापस ले लिया गया (अगस्त प्रस्ताव में)

नकारात्मक प्रावधानः

(1) भारत 1929 से पूर्ण स्वराज की मांग कर रहा था जबकि अंग्रेज अभी भी डोमिमियन स्टेट की बात कर रहे थे।
(2) प्रान्तों द्वारा अलग संविधान बनाने से संघ के निर्माण को खतरा था।
(3) यह सब प्रावधान युद्ध समाप्ति के बाद दिये जाने थे इसलिए गाँधीजी ने इसे Past dated cheque कहा था।

भारत छोड़ो आन्दोलन

कारणः

(1) संघर्ष–विराम–संघर्ष की नीति के तहत सविनय अवज्ञा आन्दोलन को लम्बा समय बीत चुका था अब एक बड़े जन आन्दोलन की आवश्यकता थी।
(2) द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भारतीय जनता परेशान थी। तथा आन्दोलन की माँग कर रही थी।
(3) व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के कारण राजनीतिक चेतना का विकास हो चुका था।
(4) अगस्त प्रस्ताव तथा क्रिप्स मिशन ने भारतीयों को निराश किया था।
(5) दक्षिणी–पूर्वी एशिया में जापान लगातार बढ़त बनाये जा रहा था तथा इससे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को खतरा उत्पन्न हो रहा था।

घटनाक्रम:

14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई तथा इसमें भारत छोड़ो प्रस्ताव पेश किया गया।

– 8 अगस्त को ग्वालिया टैंक मैदान (बॉम्बे) से आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

गाँधी ने करो या मरो का नारा दिया था (भाषण दिया)

– 9 अगस्त को ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत गाँधीजी के साथ ही कांग्रेस के सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी को पूना के आगा खाँ महल में रखा गया तथा कांग्रेस के बाकी नेताओं की अहमद नगर के किले में रखा गया।

– कांग्रेस के दूसरी पंक्ति के नेताओं ने आन्दोलन चलाया।

जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अच्यूत पटवर्धन, मीनू मसानी, अशोक मेहता, उषा मेहता, अरुणा आसफ अली

– ऊषा मेहता ने भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की राममनोहर लोहिया यहाँ पर प्रतिदिन भाषण देते थे।

– आन्दोलन अनेक स्थानों पर हिंसक हो गया।

– अंग्रेजों ने गाँधीजी पर हिंसा का आरोप लगाया तो गाँधीजी ने इसके विरोध में 21 दिन की भूख हड़ताल की।

– कई स्थानों पर समानान्तर सरकारों की स्थापना हुई।

(1) बलिया (U.P.) – चितू पाण्डे
(प्रथम समानान्तर सरकार)

(2) सतारा–नानाजी पाटिल (सबसे लम्बे समय तक चलने वाली सरकार)
वाई. वी. चव्हाण

(3) तामलुक (बंगाल) – सतीश सावंत, मांतगिनी हाजरा (इसे जातीय सरकार कहा जाता था।)
यहाँ पर विद्युत वाहिनी सेना का गठन किया गया था।
– 1945 तक भारत छोड़ो आन्दोलन समाप्त हो गया था।

महत्व:

(1) 1857 की क्रान्ति के बाद भारत का सबसे बड़ा जनआन्दोलन था।

(2) आन्दोलन अनेक स्थानों पर हिंसक हो गया तथा जनता अराजक हो गई थी।
इससे यह सिद्ध हो गया कि भारतीय जनता ब्रिटिश शासन सहने के लिए तैयार नहीं है।

(3) आन्दोलन के दौरान सेना, पुलिस व प्रशासन की सहानुभूति जनता के साथ थी इससे अंग्रेजों का इस्पाती ढाँचा ढह गया था।

(4) आन्दोलन ने भारत की आजादी तय कर दी थी। अब केवल समय का प्रसंग बचा था।

(5) भारत के सभी वर्गों ने आन्दोलन में भाग लिया था।

(6) मुस्लिम लीग के विरोध के बावजूद मुस्लिम बड़ी संख्या में आन्दोलन में शामिल हुये तथा आन्दोलन साम्प्रदायिक भी नहीं हुआ था।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी फॉर्मूला

(1) मुस्लिम लीग राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन करे।

(2) मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में जनमत संग्रह करवाया जायेगा।

(3) जनमत संग्रह से पहले सभी राजनीतिक दलों को प्रचार की छूट होगी।

(4) विभाजन की स्थिति में एक संघ का निर्माण किया जायेगा जिसमें रक्षा, विदेश व संचार को साझा रखा जायेगा।

(5) यह सब अंग्रेजों के भारत से जाने के बाद किया जायेगा।
जिन्ना ने C.R. Formula को अस्वीकार कर दिया।

जिन्ना की माँगे:

(1) जनमत संग्रह में केवल मुस्लिम लीग प्रचार करेगी। जनमत संग्रह में केवल मुस्लिम ही वोट करेंगे।

(2) साझे संघ को अस्वीकार कर दिया।

(3) पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान को मिलाने के लिए एक गलियारा दिया जाये।

(4) अंग्रेजो के भारत छोड़ने से पहले विभाजन होना चाहिए।
गाँधीजी ने जिन्ना को मनाने की कोशिश की थी। तथा जिन्ना को कायदे आजम कहा था।

वेबेल प्लान (1945)

– वेबेल भारत का G.G. था।

(1) G.G. की कार्यकारी परिषद् में गवर्नर जनरल (G.G.) तथा सेनापति को छोड़कर सभी पद भारतीयों को दिये जायेंगे।

(2) कार्यकारी परिषद् में सवर्ण हिन्दू तथा मुस्लिम सदस्यों की संख्या समान होगी।

(3) आगे की स्थिति पर चर्चा के लिए शिमला में सम्मेलन बुलाया जायेगा।

(4) राजनीतिक कैदियो को रिहा किया जायेगा।

शिमला सम्मेलन (जून, 1945)

– इसमें 22 सदस्यों ने भाग लिया था।

– कांग्रेस का नेतृत्व 'मौलाना अबुल कलाम आजाद' ने किया था।

– जिन्ना ने कहा कि कार्यकारी परिषद के मुस्लिम सदस्यों के नाम मुस्लिम लीग द्वारा दिये जायेंगे। अतः सम्मेलन असफल हो गया।

कैबिनेट मिशन (1946)

(मंत्रीमंडल समिति)

– इसमें 3 सदस्य थे।

पैथिक लॉरेन्स (भारत सचिव)

ए.बी. अलेक्जेंडर (नौसेना प्रमुख)

स्टेफोर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड का अध्यक्ष था)

प्रावधान :

(1) ब्रिटिश प्रान्त व देशी रियासतों को मिलाकर अखिल भारतीय संघ का गठन किया जाये।

(2) केन्द्र को रक्षा, विदेश व संचार दिये जायेंगे। तथा अन्य अवशिष्ट शक्तियाँ प्रान्तों को दी जायेगी।

(3) यदि किसी धार्मिक विषय पर विवाद हो जाता है तो दोनों समुदायों से अलग–अलग राय ली जायेगी।

(4) संविधान सभा का गठन किया जायेगा। (क्रिप्स मिशन की तरह)

(5) प्रान्तों को 3 भागों में बाँटा गया।
प्रान्त चाहे तो अलग समूह भी बना सकते हैं।

(6) पहले प्रान्तों का संविधान बनाया जायेगा तथा बाद में केन्द्र का संविधान बनाया जायेगा।

(7) अन्तरिम सरकार का गठन किया जायेगा।

(8) पाकिस्तान की माँग को अस्वीकार कर दिया। क्योंकि पूर्वी पाक तथा पश्चिमी पाक में भौगोलिक दूरी अधिक थी।

– रियासतों की समस्या, सेना तथा संसाधनों के बंटवारे की समस्या

सकारात्मक प्रावधान :

(1) पाक की माँग को अस्वीकार कर दिया।

(2) अन्तरिम सरकार का गठन किया जायेगा।

नकारात्मक प्रावधान :

(1) अवशिष्ट शक्तियाँ प्रान्तों को देने से केन्द्र कमजोर हो सकता था।

(2) प्रान्तों के अलग समूह बनाने की व्यवस्था थी तथा अलग संविधान बनाने की व्यवस्था थी।
कैबिनेट मिशन की सिफारिश के आधार पर संविधान सभा के चुनाव हुये।

– चुनाव में मुस्लिम लीग को (पृथक निर्वाचन की) 78 में से 73 सीटें प्राप्त हुई।

– संविधान सभा में बहुमत नहीं होने के कारण मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 को सीधी कार्यवाही दिवस मनाया। तथा देश में साम्प्रदायिक दंगे हो गये।

– मुस्लिम लीग के 5 सदस्य अन्तरिम सरकार में शामिल हुये। लियाकत अली पाक के प्रथम प्रधानमंत्री को वित्त मंत्री बनाया गया।

एटली घोषणा (20 फरवरी 1947)

– क्लीमेन्ट एटली – ब्रिटिश प्रधानमंत्री

– वेबेल के स्थान पर माउन्ट बेटन को G.G. बनाया जायेगा।

– जून 1948 तक भारत को आजाद कर दिया जायेगा।

प्लान बाल्कन :

– यह योजना माउन्ट बेटन ने दी थी।

– इसके अनुसार बाल्कन देशों की तरह भारत के कई विभाजन किये जाये।

माउन्ट बेटन योजना : (डिकी बर्ड प्लान) (3 जून 1947)

(1) 15 अगस्त को भारत व पाकिस्तान 2 डोमिनियन स्टेट बनाये जायेंगे।

(2) बंगाल व पंजाब विधानमण्डल में दोनों समुदायों के सदस्यों को अलग–अलग बैठाकर राय पूछी जायेगी।

(3) उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त तथा असम के सिल्हट जिले में जनमत संग्रह करवाया जायेगा।

(4) विभाजन के लिए रेडक्लिफ आयोग का गठन किया जायेगा।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम (18 जुलाई 1947)

– भारत व पाकिस्तान 2 डोमिनियन स्टेट होंगे।

– जब तक संविधान के निर्माण नहीं होता है तब तक 1935 के अधिनियम के तहत शासन किया जायेगा।

– जब तक चुनाव नहीं हो जाते हैं संविधान सभा संसद का कार्य करेगी।

– ब्रिटिश महारानी की केसर–ए–हिन्द उपाधि समाप्त कर दी जायेगी।

– देशी रियासतों के साथ ब्रिटिश सन्धियाँ समाप्त कर दी गई।

5 भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन

क्रान्तिकारी आन्दोलन का पहला चरण

महाराष्ट्र

(1) वासुदेव बलवन्त फड़के

- रामोसी जनजाति के साथ विद्रोह किया था। (1870)
- भारत का प्रथम संगठित क्रान्तिकारी आन्दोलन था।
- मुख्य केन्द्रः बॉम्बे

  उद्देश्य हिन्दू राज्य की स्थापना

  अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया।

  कालान्तर में दौलता रामोसी ने विद्रोह को आगे बढ़ाया।

(2) चापेकर बन्धु

(1) दामोदर चापेकर,

(2) बालकृष्ण चापेकर

- 22 जून 1897 को 2 प्लेग अधिकारी रैण्ड और आयर्स्ट की हत्या कर दी।
- चापेकर बन्धुओं को फाँसी हुई।
- तिलक को 18 महिने की जेल हुई। क्योंकि उन्होंने केसरी समाचार पत्र में आपत्तिजनक लेख लिखा था।

  (तिलक पहले राजनेता थे जिन्हें जेल हुई)

(3) विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर)

- 1899 में नासिक में मित्र मेला नामक संगठन की स्थापना की तथा 1904 में इसका नाम बदलकर अभिनव भारत कर दिया गया।

  अभिनव भारत का प्रतीक चिन्हः चित्तौड़गढ़ का विजयस्तम्भ था।
- कालान्तर में सावरकर पढ़ने हेतु लंदन चले गये।
- अभिनव भारत के अनन्त लक्ष्मण करकरे ने नासिक के जज जैक्सन की हत्या कर दी।
- करकरे को फाँसी हुई।

बंगाल

अनुशीलन समिति

कलकत्ता	मिदनापुर	ढाका
पी. मित्रा	ज्ञानेन्द्र नाथ बसु	बारीन्द्र घोष भूपेन्द्र नाथ दत्त

समाचार पत्रः
• युगान्तर, • संध्या

– हेमचन्द कानूनगो को बम निर्माण विधि हेतु पेरिस भेजा। (रूसी व्यक्ति से सीखा था)
– माणिकतल्ला (कलकत्ता) में बम बनाना शुरू किया।
– प्रफुल्ल चाकी तथा खुदीराम बोस ने मुजफ्फर के जज को किंग्सफोर्ड को मारने का प्रयास किया लेकिन गलती से 2 कैनेडी महिलाऐं मारी गई।
– प्रफुल्ल चाकी ने पुलिस से बचने के लिए आत्महत्या कर ली तथा खुदीराम बोस को फाँसी दी गई।
– अंग्रेजों ने माणिकतल्ला से 34 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया इनमें अरविन्द घोष भी शामिल थे। इसे अलीपुर षड्यंत्र मुकदमा कहा जाता है।
– नरेन्द्र गोसाई (34 में से था) सरकारी गवाह बन गया था इसलिए बाकी क्रान्तिकारियों ने इसकी हत्या कर दी थी।
– अरविन्द घोष को सबूतों के अभाव में छोड़ दिया गया।
– अरविन्द घोष पाण्डिचेरी चले गये थे तथा वहाँ आश्रम खोल लिया।
– **अरविन्द घोष की पुस्तकें:**
  - सावित्री
  - Life denine
  - Essays on Geeta
  - New Lamps for old
    इसमें नरमपंथियों की आलोचना की गई थी

बारिन्द्र घोस की पुस्तकें:

भवानी मंदिर, वर्तमान राजनीति के नियम

बाधा जतिन 1915 में बालासोर (उड़ीसा) में पुलिस मुठभेड़ में शहीद हो गये थे।

पंजाब

मुख्य नेता:

- लाला लाजपतराय
- अजीत सिंह (भगत सिंह के चाचा)

संगठन – अंजुमन–ए–मोहब्बत–ए–वतन

समाचार पत्र – भारत माता

विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन

(1) लंदन

श्यामजी कृष्ण वर्मा

संगठन Indian Homerule society स्थापित (1905)

कार्यालय India House

समाचार पत्र Indian Sociologist

अन्य सहयोगी:

1. अब्दुल्ला सुहरावर्दी
2. मैडम भीखाजी कामा
3. वीर सावरकर
4. मदन लाल धींगड़ा

– 1907 में 1857 की क्रान्ति की स्वर्ण जयन्ती मनाई।
– वीर सावरकर ने Grove warning नामक पर्चा प्रकाशित किया।
– मदन लाल धींगड़ा ने भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार कर्जन वाइली की हत्या कर दी।
– मदन लाल धींगड़ा को फाँसी हुई तथा वीर सावरकर को काले पानी की सजा हुई।
(वीर सावरकर ने रास्ते में जाते समय बंगाल की खाड़ी में कूद गये थे।)

मैडम भीखाजी कामा

- पारसी महिला थी
- दादाभाई नौरोजी की सचिव थी।
- इन्हें भारतीय क्रान्ति की माता कहा जाता है।
- जर्मनी के स्ट्रटगार्ट में 1907 में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भारतीय झण्डा फहराया।

(2) वैंकुवर

तारकनाथ दास, जी.डी. कुमार ने United India House की स्थापना की।

- तारकनाथ दास : समाचार पत्रः Free Hindustan
- जी.डी. कुमार समाचार पत्रः **स्वदेशी सेवक**

संगठन : स्वदेशी सेवक गृह

- रामनाथ पुरी समाचार पत्र : सर्कुलर–ए–हिन्द

(3) सेन फ्रांसिस्को (अमेरिका)

लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाखना ने युगान्तर आश्रम की स्थापना की।

- लाला हरदयाल स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे।
- 1 नवम्बर 1913 से 'गंदर' नामक समाचार पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया।
  सबसे पहले उर्दू भाषा में निकाला गया परन्तु बाद में अन्य मराठी, पंजाबी, पश्तो आदि कई भाषाओं में निकाला गया।
- गदर आन्दोलनकारियों ने भारत में रासबिहारी बोस को अपना नेता बनाया।
- 21 फरवरी 1915 को भारत में एक साथ क्रान्ति की योजना बनाई गई लेकिन अंग्रेजों को पता चल जाने के कारण यह योजना असफल हो गई।
- भाई परमानन्द व करतारसिंह सराभा को फाँसी हुइ।
- इसे 'प्रथम लाहौर षड्यंत्र मुकदमा' कहा जाता है।

(4) अफगानिस्तान

रेशमी रूमाल षड़यंत्र (1913)

- उबेदुल्ला सिन्धी, महमूद हसन
- 1915 में राजा महेन्द्र प्रताप ने अफगानिस्तान में भारत सरकार का गठन किया।
- इन्होंने वृन्दावन में प्रेम विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का महत्वः

(1) इन्होंने व्यक्तिगत त्याग एवं बलिदान के उदाहरण पेश किये अतः युवा वर्ग राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ा जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार बढ़ा।
(2) निष्क्रियता के दौर में आन्दोलन को जारी रखा था।
(3) इनके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन गाँवों तक पहुँचा। क्योंकि क्रान्तिकारी, गतिविधियों के बाद गाँवों में शरण लेते थे।
(4) इनके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन विदेशों तक पहुँचा।
(5) अंग्रेजों को 1909 के सुधार करने पड़े।
(6) अंग्रेजों को 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करना पड़ा।

कमियाँ

(1) इनके पास संगठन, नेतृत्व व रणनीति का अभाव था।
(2) अंग्रेजी सरकार ने इसे आसानी से कुचल दिया था।
(3) भारतीय जनता को अपने साथ जोड़ नहीं पाये थे यहाँ तक कि गरमपंथियों का सहयोग भी प्राप्त नहीं कर पाये।
(4) भारत में लोकप्रिय आन्दोलन का रूप नहीं ले पाये थे।
(5) इन्होंने धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया था अतः मुस्लिम वर्ग इनसे जुड़ नहीं पाया था।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का दूसरा चरण

- **हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन (HRA) (1924) (कानपुर)**

संस्थापकः

शचीन्द्र सान्याल पुस्तक – बन्दी जीवन, वर्तमान रणनीति

भगवती चरण बोहरा – The philosopy of bomp

चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, जोगेश चटर्जी

– 9 अगस्त, 1925 को काकोरी में सरकारी खजाने वाली ट्रेन को लूट लिया गया।

– **इस मुकदमें में 4 लोगों को फाँसी हुई थी।**

  - राम प्रसाद बिस्मिल,
  - अशफाक उल्ला खाँ
  - रोशन सिंह
  - राजेन्द्र लाहिड़ी

- **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोएिशन (HSRA) (1928), फिरोजशाह कोटला (दिल्ली)**

संस्थापक :

  - चन्द्र शेखर आजाद
  - भगत सिंह
  - राजगुरु
  - सुखदेव

– 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में लालाजी को मार दिया गया।
इसके विरोध में 17 दिसम्बर 1928 को सांडर्स को मार दिया गया।

– 8 अप्रैल 1929 को भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में केन्द्रीय विधानमण्डल की खाली बेन्च पर बम फेंके थे।

– क्रान्तिकारियों ने जेल में भूख हड़ताल की थी। 64 दिन की भूख हड़ताल के बाद जतिन दास शहीद हो गये।

– 23 मार्च 1931 को सांडर्स को मारने के आरोप में भगतसिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को फाँसी दी गई। इसे 'द्वितीय लाहौर षड़यंत्र केस' कहा जाता है।

– 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद, पुलिस मुठभेड़ में शहीद हो गये।

भगतसिंह के संगठन

  - नौजवान भारत सभा
  - लाहौर छात्र संघ

भगतसिंह की पुस्तकः

मैं नास्तिक क्यों हूँ

- **इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (IRA)**
  - **संस्थापक :** सूर्यसेन
    चटगाँव के राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक थे।
    इन्होंने विद्रोही संघ की स्थापना भी की थी।
  - **सहयोगी :** अनन्त सिंह, गणेश, लोकीनाथ बाउले, प्रीतिलता वाडेकर, कल्पना दत्त

– 18 अप्रैल 1930 को चटगाँव में शस्त्रागार पर हमला किया। तथा वहाँ से हथियार प्राप्त किये।

– चटगाँव में सूर्यसेन के नेतृत्व में राष्ट्रीय सरकार बनाई गई।

– प्रीतिलता वाडेकर रेलवे कारखाने पर आक्रमण के दौरान शहीद हो गई थी।

– 1934 में सूर्यसेन को फाँसी दे दी गई।
शांति घोष तथा सुनीति चौधरी नामक 2 स्कूली छात्राओं ने 14 दिसम्बर 1931 कोमिल्ला (उड़ीसा) के जिलाधिकारी को गोली मार दी थी।

– 6 फरवरी 1932 को बीना दास ने दीक्षान्त समारोह में गवर्नर को गोली मार दी।

महत्वः

(1) व्यक्तिगत त्याग व बलिदान के उदाहरण से युवा वर्ग राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ा।

(2) निष्क्रियता के दौर में राष्ट्रीय आन्दोलन को जारी रखा था।

(3) इन्होंने धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया था अतः राष्ट्रीय–आन्दोलन को धर्मनिरपेक्ष स्वरूप प्राप्त हुआ।

(4) इन्होंने भारत में समाजवादी विचारधारा को लोकप्रिय किया इससे राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नया आयाम प्राप्त हुआ।

(5) इन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति की बात की। अर्थात् भारत को केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

(6) इसके दबाव के कारण अंग्रेजों को गाँधी–इरविन बराबरी का समझौता करना पड़ा।

(7) 1935 के सुधार इन्हीं के दबाव का नतीजा था।

(8) समाजवादी विचारधारा के कारण मजदूरों व किसानों में राजनीतिक चेतना आई तथा वे बड़ी संख्या में सविनय अवज्ञा आन्दोलन से जुड़े।

प्रथम व द्वितीय चरण के क्रान्तिकारी आन्दोलन में अन्तरः

	प्रथम	द्वितीय
(i)	संगठन का अभाव था।	बड़ी संख्या में संगठन स्थापित किये गये।
(ii)	केवल राजनीतिक आजादी में विश्वास करते थे।	इन्होंने संग्रह क्रान्ति की बात की। अर्थात् राजनीतिक के साथ समाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता भी आवश्यक मानते थे।
(iii)	इन्होंने धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया था।	इन्होंने धर्म–निरपेक्षता पर बल दिया था।
(iv)	महिलाऐं क्रान्तिकारी गतिविधियों में शामिल नहीं थी।	विभिन्न महिलाओं ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया
(v)	भारत में लोकप्रिय आन्दोलन का रूप नहीं ले पाये थे।	भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हुये थे।
(vi)	इनके पास विचारधारा का अभाव था।	ये समाजवादी विचारधारा में विश्वास रखते थे।

Springboard

6 भारत में साम्यवादी आन्दोलन

मानवेन्द्र नाथ रॉय (M.N. रॉय)

- 1920 में ताशकन्द में भारतीय साम्यवाद दल की स्थापना की (लेनिन की सलाह पर)
- ये स्टालिन के परामर्शदाता थे।
- कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल में भाग लेने वाले एकमात्र भारतीय थे।
- **समाचार पत्रः**
  वेनगार्ड ऑफ इंडियन इंडिपेंडेस (एडवांस्ड गार्ड)
- **पुस्तक :** इंडिया इन ट्रांजिशन
- **सहयोगः** इंडिया इन ट्रांजिशन
- **सहयोगी :** अवनी मुखर्जी, रोजा फीटीग्राफ, मुहम्मद अली, मुहम्मद शफीक
  1940 में अतिवादी लोकतंत्र दल की स्थापना की।
- 1925 में सत्य भक्त ने कानपुर में कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की।
  महासचिव M.C. घाटे

साम्यवादी मुकदमेः

(1) पेशावर षड़यंत्र केस (1922)

- रूस से प्रशिक्षण प्राप्त करके आ रहे साम्यवादियों को पेशावर में गिरफ्तार कर लिया था।

(2) कानपुर षड्यंत्र केस (1924)

	साम्यवादी	केन्द्र	समाचार पत्र
(i)	श्री पाद अमृत डांगे	बॉम्बे	द सोशलिस्ट
(ii)	मुजफ्फर अहमद	बंगाल	नवयुग
(iii)	गुलाम हुसैन	पंजाब	इन्कलाब
(iv)	सिंगार वैली चेट्टियार	मद्रास	लेबर किसान गजट
	श्रीपाद अमृत डांगे का पर्चा/लेख : गाँधी बनाम लेनिन		
	मुजफ्फर अहमद + नजरुल इस्लाम ने बंगाल नामक समाचार पत्र निकाला।		

(3) मेरठ षड़यंत्र केस (1929):

- 31 साम्यवादियों को गिरफ्तार किया था जिनमें से 3 अंग्रेज थे।
  फिलीप स्प्रेट, बेन ब्रेउले, लेस्टर हचिन्सन
- इनका मुकदमा लड़ने वाले वकील
- कैलाश नाथ काटजू, जवाहर लाल नेहरू, एम.सी. छागला, एच. एफ. अंसारी
- महात्मा गाँधी इन साम्यवादियों से मुलाकात करने जेल (मेरठ) मिलने गये।

साम्यवादी आन्दोलन के चरणः

(1) प्रथम चरणः (1920–1929)

- भारत में साम्यवादी आन्दोलन को लेकर 2 विचारधाराएँ थी प्रथम विचारधारा लेनिन की थी। इके तहत साम्यवादियों को भारत में अंग्रेजी सत्ता का विरोध करना चाहिए। तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होना चाहिए। चूँकि राष्ट्रीय आन्दोलन कांग्रेस पार्टी चला रही है अतः साम्यवादियों को कांग्रेस का साथ देना चाहिए।
- दूसरी विचारधारा M.N रॉय की थी। इसके तहत साम्यवादियों को अंग्रेजों के साथ–साथ कांग्रेस का भी विरोध करना चाहिए। क्योंकि कांग्रेस बुर्जुआ वर्ग की पार्टी है। साम्यवादियों को भारत में अपनी अलग पहचान स्थापित करनी चाहिए। प्रथम चरण में लेनिन की विचारधारा को अपनाया गया। तथा इसके लिए राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस का सहयोग कर अंग्रेजों का विरोध किया गया।

  इसलिए नेहरू जैसे कांग्रेसी ने साम्यवादियों का मुकदमा लड़ा तथा गाँधीजी साम्यवादियों से मिलने मेरठ जेल गये थे।

(2) द्वितीय चरणः (1929–1934)

- दूसरे चरण में M.N. रॉय की विचारधारा को अपनाया गया अतः अंग्रेजों के साथ–2 कांग्रेस का भी विरोध किया गया।
- इन्होंने नेहरू तथा बोस की आलोचना की तथा इन्हें पूँजीवाद का ऐंजेन्ट बताया गया।
- गाँधी–इरविन समझौते को देश के साथ विश्वासघात बताया गया।
- इनके अतिवादी रूख के कारण अंग्रेजों ने साम्यवादी दलों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

(3) तीसरा चरण (1934–1939)

- प्रतिबन्ध के कारण साम्यवादियों ने कांग्रेस में शामिल होने की नीति बनाई। तथा कांग्रेस की विचारधारा को साम्यवाद में बदलने का प्रयास किया।
- कांग्रेस में इन्होंने सुभाष चन्द्र बोस का समर्थन किया तथा उन्हें हरिपुरा व त्रिपुरी में लगातार अध्यक्ष बनाया। जबकि त्रिपुरी में तो गाँधीजी भी बोस के खिलाफ थे।

(4) चौथा चरणः (1939–45)

- दूसरे विश्व युद्ध के समय हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया। अतः रूस, ब्रिटेन के पक्ष में आ गया।
- भारतीय साम्यवादियों ने अंग्रेजों का सहयोग किया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया।
- विभिन्न मुकदमों में सरकारी गवाह बन गये थे।

(5) पाँचवा चरण (1945–47)

- अब भारत की आजादी तय हो चुकी थी तथा विभाजन का प्रसंग बचा था।
- साम्यवादियों ने कैबिनेट मिशन के सामने भारत को भाषा व संस्कृति के आधार पर 17 भागों में बाँटने की बात की।

साम्यवादी आन्दोलन का महत्वः

(1) किसानों व मजदूरों में राजनीतिक चेतना का विकास किया।
(2) किसानों व मजदूरों के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर महत्व प्राप्त हुआ।
(3) राष्ट्रीय आन्दोलन में उन रिक्त स्थानों को भरा जहाँ पर कांग्रेस नहीं पहुँच पाई थी।
(4) समाजवादी विचारधारा के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन को नया आयाम प्राप्त हुआ।
(5) इन्होंने धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का धर्म–निरपेक्ष स्वरूप स्थापित हुआ।
(6) समाजवादी विचारधारा के कारण क्रान्तिकारी आन्दोलन को गति प्राप्त हुई।
(7) किसानों व मजदूरों में राजनीतिक चेतना के विकास से सविनय अवज्ञा आन्दोलन को लाभ प्राप्त हुआ।
(8) इनके कारण भारत में विभिन्न किसान व मजदूर संगठनों की स्थापना हुई।
(9) इन्होंने लगातार संघर्ष की नीति अपनाई थी।

साम्यवादी आन्दोलन की कमियाँः

(1) भारत में उद्योगों का विकास नहीं हुआ था अतः मजदूर नहीं थे तथा किसान अशिक्षित थे। इसलिए भारत साम्यवादी परिस्थितियों के अनुकूल नहीं था।

(2) शांति प्रिय भारतीय समाज, हिंसा के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता था।

(3) साम्यवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुसार ढालने का प्रयास नहीं किया गया। तथा भारतीय साम्यवादी सदैव रूस से प्रेरणा प्राप्त करते रहे।

(4) भाारतीय साम्यवादियों द्वारा कई गलत निर्णय लिये गये।

जैसेः कांग्रेस का विरोध, भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध, भारत के 17 विभाजन

(5) साम्यवादी आपस में संगठित नहीं थे तथा इनके पास नेतृत्व का अभाव था।

कांग्रेस समाजवादी दल

– 1934 में बॉम्बे में स्थापना की गई।

– यह कांग्रेस में एक दबाव समूह था।

उद्देश्य :

(1) कांग्रेस में समाजवादी विचारधारा को लोकप्रिय बनाना।

(2) युवाओं को साम्यवाद की तरफ जाने से रोकना।

(3) युवाओं को कांग्रेस में साम्यवाद का विकल्प उपलब्ध करवाना।

मुख्य नेताः

	नेता	पुस्तक
(i)	जय प्रकाश नारायण	समाजवाद क्यों ?
(ii)	राम मनोहर लोहिया	भारत विभाजन के गुनहगार
(iii)	आचार्य नरेन्द्र देव	समाजवाद और राष्ट्रीय आन्दोलन
(iv)	अच्युत पटवर्धन	
(v)	अशोक मेहता	

अन्य समाजवादी दल

	नाम	संस्थापक
(i)	क्रांतिकारी साम्यवादी दल	सोमेन्द्र नाथ टैगोर
(ii)	भारतीय बोल्शेविक दल	N.D. मजूमदार
(iii)	बोल्शेविक लेनिनिस्ट दल	अजीत रॉय इन्द्रसेन

आजाद हिन्द फौज

- कैप्टन मोहन सिंह तथा निरंजन सिंह गिल ने जापानियों के सहयोग आजाद हिन्द फौज का गठन किया।
- इन्होंने रास बिहारी बोस को अपना नेता बनाया।
  इन्होंने टोकियों में इंडियन इंडिपेंडेस लीग की स्थापना की।
- इस फौज में कालान्तर में सुभाष चन्द्र बोस को मुख्य नेता बनाया गया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सरकार का गठन किया।
- सिंगापुर व रंगून में आजाद हिन्द फौज के मुख्यालय बनाये गये।
- आजाद हिन्द फौज की झाँसी की रानी बटालियन की प्रमुख लक्ष्मी स्वामीनाथन थी।
- सुभाष चन्द्र बोस ने गाँधीजी को राष्ट्रपिता कहा था।
- आजाद हिन्द फौज ने अण्डमान एवं निकोबार द्वीप पर कब्जा कर लिया था तथा इनके नाम बदलकर शहीद व स्वराज द्वीप कर दिया था।
- 1945 में जापान ने आत्मसर्मपन कर दिया। इसलिए आजाद हिन्द फौज को पीछे हटना पड़ा।
- ताइवान जाते समय सुभाष चन्द्र बोस की विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई।
- आजाद हिन्द फौज के 3 अधिकारियों पर लाल किले में मुकदमा चलाया ।
- प्रेम कुमार सहगल, शाहनवाज खान, गुरुबक्श सिंह ढिल्ले।
- इनका मुकदमा लड़ने वाले वकील
- भूला भाई देसाई, कैलाश नाथ काटजू, तेजबहादुर सप्रु, जवाहर लाल नेहरू।
- तीनों अधिकारियों को फाँसी की सजा हुई। गवर्नर जनरल वेबेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुये इन्हें माफ कर दिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस की आत्मकथा–इंडियन स्ट्रगल
  सुभाष चन्द्र बोस की जीवनी स्प्रिंगिग टाइगर – लेखक (ह्यू टोये)

शाही नौसेना विद्रोह

- 18 फरवरी 1946 – 25 फरवरी 1946
- नौसैनिकों ने नस्लीय भेदभाव व खराब खाने की शिकायत की।
- B.C. दत्त नामक सैनिक ने तलवार नामक जहाज पर अंग्रेजों भारत छोड़ो लिख दिया था। उसे गिरफ्तार कर लिया गया।
- यह विद्रोह बॉम्बे से कराची बन्दरगाह तक फैल गया।
- 22 फरवरी को मजदूरों ने इसके पक्ष में हड़ताल की।
- पटेल व जिन्ना के समझाने पर नौसैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

नौसैनिकों के आत्मसमर्पण के कारण

(1) ब्रिटिश सरकार विद्रोह को कुचल सकती थी।

(2) आजाद भारत में भी सैनिकों के विद्रोह की संभावनाऐं भी बन सकती थी।